राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर

(राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय)

डॉ. एस.राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल,
ब्लॉक नं.10, जे.एल.एन.मार्ग, जयपुर।
दूरभाष : 0141-2701064

विवरणिका एवं पाठ्यक्रम

शैक्षणिक सत्र
2024-25

आयुक्तालय द्वारा जारी प्रवेश नीति एवं समय-समय पर जारी प्रवेश कार्यक्रम हेतु विभाग की वेबसाईट : https://hte.rajasthan.gov.in/dept/dce का अवलोकन करें।

राजस्थान संगीत संस्थान

प्राचार्य की कलम से

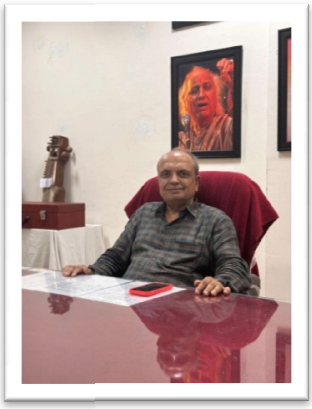

स्नेहिल विद्यार्थीगण,

शैक्षणिक सत्र 2024–25 में आपका स्वागत है। भारतीय संस्कृति का सुदृढ़ आधार है संगीत और अध्यात्म। सुव्यवस्थित ध्वनि का सृजन संगीत है। प्राचीन भारत में ऋषि–मुनियों ने संगीत की उत्पत्ति नाद से मानी है। जहाँ संगीत ईश्वर की उपासना, आध्यामिक साधना व मनोरंजन का साधन है, वहीं संगीत नीरसता व नकारात्मकता को दूर कर एकाग्रता व जीवन के प्रति सकारात्मक भावों को बढ़ाने में सहायक है। संगीत जीवन को आनन्दित व प्रफुल्लित करता है साथ ही अनुशासित भी करता है। गायन, वादन एवं नृत्य तीनों का समावेश संगीत कहलाता है।

राजस्थान संगीत संस्थान ''भारतीय संगीत'' विषय के लिए पूर्णतः समर्पित राजस्थान का एकमात्र राजकीय स्नातकोत्तर संगीत महाविद्यालय है। इसका उदेद्श्य भारतीय शास्त्रीय संगीत की आधारभूत शिक्षा प्रदान कर विद्यार्थियों को संगीत की विविध विधाओं में पारंगत करना है। अपने गौरवशाली इतिहास व संगीत की संस्थागत शिक्षा प्रणाली पर आधारित यह संस्थान निरन्तर उन्नयन की ओर अग्रसर है। संस्थान में कंठ संगीत, सितार, वॉयलिन, तबला व कथक नृत्य विषय में स्नातक, स्नातकोत्तर (गायन) व डिप्लोमा संगीत विषय में प्रवेश ले सकते है। योग्य, अनुभवी व बेहतरीन गुरूजनों के सानिध्य में विद्यार्थी अपनी नैसर्गिक कला प्रतिभा को उत्कृष्टता की ओर ले जा सकते है।

यहाँ से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान कायम की है। यहाँ के विद्यार्थी संगीत के क्षेत्र में अनेक उच्च पदों पर आसीन है। यहाँ की गौरवमयी उपलब्धियों, संगीत शिक्षा के विस्तार व दृढ़ीकरण का मूलाधार समर्पित विद्यार्थी ही है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों को निरन्तर संगीत शिक्षा प्रदान कर उन्हें यहाँ स्थापित शोध केन्द्र के माध्यम से अनुसंधान व अन्य विविध आयामों के साथ भी जोड़ने का प्रयास जारी है ताकि उनकी संगीत शिक्षा की उपयोगिता व सार्थकता में वृद्धि हो। अपेक्षा है कि इस महान कार्य को आगे बढ़ाने में विद्यार्थियों व गुरूजनों का सहयोग सदैव रहेगा।

मंगलमय भविष्य की कामनाओं सहित।

प्राचार्य
प्रो. (डॉ.) दिलीप कुमार गोयल
राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर

राजस्थान संगीत संस्थान

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान संगीत संस्थान – एक विहंगावलोकन	4
2.	उपाधि की मान्यता	5–7
3.	राजस्थान संगीत संस्थान – एक दृष्टि	8–10
4.	प्रवेश प्रक्रिया	11
5.	प्रवेश निर्देश, आरक्षण संबंधी नियम	12
6.	पुस्तकालय, पुस्तकालय के नियम,छात्रवृतियाँ एवं अन्य योजनाऐं	13
7.	सामान्य नियम	14
8.	विद्यार्थियों हेतु अनुशासन सम्बन्धी निर्देश	15
9.	एक विषय से दूसरे विषय में स्थानांतरण	15
10.	छात्र–संघ	15
11.	प्रवेश शुल्क विवरण	16
12.	परीक्षाओं का अंक विभाजन	17–18
13.	विभिन्न कक्षाओं हेतु निर्धारित कालांश	19
14.	पाठ्यक्रम – कंठ संगीत एवं वादन : सितार, वॉयलिन (मध्यमा, विशारद, निपुण) वादन–तबला (मध्यमा, विशारद, निपुण) शास्त्रीय नृत्य–कत्थक (मध्यमा, विशारद, निपुण)	20–53
15.	संगीत संस्थान के सदस्य गण	54

राजस्थान संगीत संस्थान– एक विहंगावलोकन

विरासत में अंकुरित राज. संगीत संस्थान, शैशव अवस्था में दीर्घकाल तक महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट एवं क्राफ्ट के नाम से प्रसिद्ध रहा। दिनांक 30 दिसंबर, 1950 को इस संस्था की स्थापना सरकारी सहयोग से राजस्थान कला संस्थान के नाम से की गई, जिसमें पूर्व में संचालित चित्रकला एवं मूर्तिकला के साथ संगीत कला को जोड़ा गया। संगीत संस्था के संस्थापक प्राचार्य पं. ब्रह्मानन्द गोस्वामी थे। अब तक की अवधि में विद्यार्थियों को उच्च कोटि के सम्माननीय गुरूजनों के अमूल्य मार्गदर्शन में चित्रकला, हस्तकला आदि में न केवल निपुणता ही प्राप्त करने का अवसर मिला, वरन् विशिष्ट एवं अतिविशिष्ट कलाकारों की श्रेणी में भी नामांकित होने का गौरव प्राप्त हुआ।

वर्ष 1966 में राजस्थान कला संस्थान को चित्रकला व मूर्तिकला के लिए ''राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस'' तथा संगीत विषय के लिए ''राजस्थान संगीत संस्थान'' नाम दिया गया। संस्थान ने तीन दशक, सत्र 1978–79 तक की उपर्युक्त सोपानबद्ध यात्रा प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर के नियंत्रण में पूर्ण की।

सत्र 1979–80 में निदेशालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान, जयपुर ने संगीत शिक्षा के उत्तरोत्तर उन्नयन (निपुण / डिग्री कोर्स) के उद्देश्य से इसे अधिग्रहण करके प्रगति के अग्रिम निर्णायक चरण में अग्रसर होने का गौरव प्रदान किया। सत्र 1988–89 में राज. विश्वविद्यालय की B.F.A. (बैचलर ऑफ फाईन आर्ट) कक्षाएं भी प्रारंभ की गईं। जो कि वर्तमान में B.P.A. (बैचलर ऑफ परफार्मिंग आर्ट) के नाम से जाना जाता है।

उच्च शिक्षा, राजस्थान सरकार के पत्र क्रमांक प 9(1) शिक्षा–3/2004 दिनांक 29– 08–2007 द्वारा राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर को स्नातक स्तर के राजकीय महाविद्यालय का दर्जा प्रदान करने की प्रशासनिक स्वीकृति दी गयी।

सत्र 2013–14 में संस्थान को स्नातकोत्तर स्तर में क्रमोन्नत किया गया।

उद्देश्य – राजस्थान में शास्त्रीय संगीत के प्रति जनता में रुचि उत्पन्न करते हुए परम्परागत कंठ संगीत, वादन एवं कथक नृत्य का संरक्षण एवं प्रचार प्रसार करना, प्रगतिशील पाठ्यक्रम द्वारा सुनिश्चित क्रमबद्ध प्रशिक्षण प्रदान करना तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत की आधारभूत शिक्षा से लेकर प्रभावी संगीत प्रस्तोता एवं परिपक्व शिक्षक तैयार करना इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त जो विद्यार्थी अन्य विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत है या अन्यत्र कार्यरत/सेवारत है और जिनमें संगीत की प्रतिभा है, उन्हें भी संगीत शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य है।

राजस्थान संगीत संस्थान

उपाधि की मान्यता पत्र

(TRUE COPY)
(K.N. GUNTHEY)
Officer on Special Duty
Prayag Sangeet Samiti, Allahabad

To,

The Pracharya,
Rajasthan Sangeet Sansthan, Jaipur

Subject: Recognition of Eight Years Music Course in Fine Arts of the Rajasthan Sangeet Sansthan] Jaipur (Raj-)

Dear Sir,

With reference to your letter No- 469 dt- 6-9-1983 and Your Deputy Director, College Education, Rajasthan Jaipur letter No- F- 15(2) EÛam@DCV 817 2557 dated 25-10-83 on the Subject noted above] I have to inform you that 8 Years Music Syllabus of your institution was the experts of the Prayag Sangeet Samiti, Allahabad and after their suggestion to matter was place before our Examination Committee for consideration- On the recommendation of the Eeperts, the Degree & Diplomas awarded by your institution have now been approved to our Committed as follows:

Degrees/Diplomas awarded by the Rajasthan Sangeet Sansthan] Jaipur	Equivalent to the Samiti's Dipolomas/Degrees
1. Sangeet Madhyama	1st Year
2. Sangeet Madhyama	2nd Year
3. Sangeet Madhyama	3rd Year
4. Sangeet Visharad	4th Year
5. Sangeet Visharad	5th Year
6. Sangeet Visharad	6th Year (Prabhakar)
7. Sangeet Nipun	8th Year (Praveen)

Note: After a gap one year after passing Sangeet Visharad, the Sangeet Nipun Degree awarded by his Institution (i.e. Rajasthan Sangeet Sansthan, Jaipur) be equivalent to Sangeet Praveen of the Samiti- You are, therefore requested to circulate the above decision of our Committee to all the Institution of Rajasthan connected with our Institution of appearing in the Examination of the Prayag Sangeet Samiti] Allahabad-

Kindly acknowledge the receipt of this letter.

Your's faithfully, Sd/-

(Banwari Lal)

Registrar

राजस्थान संगीत संस्थान

मान्यता पत्र

राजस्थान संगीत संस्थान की उपाधियाँ राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा समकक्षता एवं मान्यता प्राप्त हैं। बी.ए. की डिग्री के साथ के साथ संगीत विशारद योग्यता प्राप्त छात्र एम.एम. संगीत में प्रवेश योग्य है। बी.ए. के साथ संगीत निपुण योग्यता एम.ए. के समकक्ष है।

Com- Recognition of Degrees /84-856631

ABHIMANYU SINGH

REGISTRAR, (Jaipur Rajasthan)

D.O. No. F./4 ( ) 184/Aca. 11/469

Dated: 3 May, 1984

Dear Mrs. Thanvi,

Please refer to your D.O. Letter No. 3140 dated 26.4.84 regarding the recognition of 8 year Diploma of the Rajasthan Sangeet Sansthan, Jaipur.

The Matter has already been considered and decided- The following examinations conducted by the Directorate of College education, Rajasthan has been recognized by the University:

1. Sangeet Visharad Diploma (6 years course) along with B.A. degree of a recongnised University has been recognized as equivalent to the University's B.A. Exam. (with Music as an optional subject.)

2. Sangeet Nipuna Diploma (8 years course) along with B.A. degree of a recognized University has been recognized as equivalent to the University's M.A. Exam. in Music.

With regards,

Mrs. Krishna Thanvi

Dy. Director,

Directorate of College Education

Your's Sincerely

Sd/-

(Abhimanyu Singh)

राजस्थान संगीत संस्थान

Rajasthan JAIPUR

मान्यता पत्र

राजस्थान सरकार

उच्च शिक्षा विभाग

जयपुर, दिनांक 29.08.2007 क्रमांक–प.9 (1) शिक्षा–3/2004

राजस्थान संगीत संस्थान, किशनपोल बाजार, जयपुर को स्नातक स्तर के राजकीय महाविद्यालय का दर्जा प्रदान किये जाने की प्रशासनिक स्वीकृति तत्काल प्रभाव से एतद् द्वारा प्रदान की जाती है। यह स्वीकृति वित्त (नियम) विभाग के आई.डी. संख्या 348 दिनांक 6.8.2007 द्वारा किये गये परामर्श के अनुसरण में जारी की जा रही है।

आज्ञा से
(वी.एम. कपूर)
उप शासन सचिव, उच्च शिक्षा

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय

खैरागढ़–491881, छत्तीसगढ़

ईमेलः iksvvkgh@yahoo-co-in

क्रमांक–वी.सी./ओ.एस.डी./2009–1015 दिनांक 13 नवम्बर, 2009

प्रति,
प्राचार्य
राजस्थान संगीत संस्थान,
किशनपोल बाजार, जयपुर–302001 (राज.)

विषय : राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर के 6 वर्षीय संगीत विशारद पाठ्यक्रम के समकक्षता के संबंध में

महोदय,

आपके पत्र क्रमांक 572 दिनांक 09/04/2009 का सन्दर्भ में सूचित करना है कि समकक्षता समिति की सम्पन्न बैठक दिनांक 26/10/2009 की अनुशंसा पर शिक्षा समिति की सम्पन्न बैठक दिनांक 27/10/2009 में आपकी संस्था में संचालित छः वर्षीय संगीत विशारद डिप्लोमा पाठ्यक्रम जिसकी परीक्षा महाविद्यालय शिक्षा निदेशालय राजस्थान द्वारा संचालित की जाती है, को इस विश्वविद्यालय के छः वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के समकक्ष मान्य किये जाने का निर्णय लिया गया है।

आदेशानुसार

भवदीय

(प्रो.डॉ.टी. उन्नीकृष्णन)

कार्यकारी कुलसचिव

राजस्थान संगीत संस्थान – एक दृष्टि

विषयवार स्वीकृत स्थान एवं वर्ग

आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा, राजस्थान, जयपुर द्वारा मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम

पाठ्क्रम का नाम	मध्यमा	(त्रि–वर्षीय)	विशारद	(त्रि–वर्षीय)	निपुण	(द्वि–वर्षीय)
डिप्लोमा पाठ्यक्रम	स्थान	वर्ग	स्थान	वर्ग	स्थान	वर्ग
1. कंठ संगीत	90	2	30	1	15	1
2. सितार	12	1	10	1	10	1
3. वॉयलिन	20	2	10	1	10	1
4. तबला	30	2	10	1	5	1
5. नृत्य	40	2	20	1	15	1

राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम का नाम	बी.पी.ए (चार वर्षीय)	एम.पी.ए. (द्विवर्षीय)	
डिप्लोमा पाठ्यक्रम	प्रथम वर्ष में स्वीकृत स्थान	विषय	स्वीकृत स्थान
1. कंठ संगीत, सितार, वायलिन	60	कंठ संगीत	10
2. तबला	10	–	–
3. कथक नृत्य	10	–	–
कुल स्थान	80	–	10

गवर्निंग कॉंसिल की बैठक दिनांक 02.05.2022 की मिनिट्स के बिन्दु सं. 6 एवं आयुक्तालय के आदेश क्रमांक : एफ 16(2) परीक्षा/पार्ट/आकाशि/20017/131 दिनांक 22.05.2019 के अनुसार न्यूनतम 33 प्रतिशत विद्यार्थियों का प्रवेश आवश्यक है।

राजस्थान संगीत संस्थान

बी.पी.ए में प्रवेश हेतु मापदण्ड

1. बी.पी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान जयपुर की नीति 2024–25 में आधार पर होगा।

2. बी. म्यूज प्रथम वर्ष में प्रवेश हेतु दिनांक 31 जुलाई 2023 को आयु 25 वर्ष से अधिक नहीं होनी चहिए। बी.पी.ए. 2024

3. संस्थान में संबंधित विषय के संकाय सदस्य प्रवेशार्थी की अभिरूचि परीक्षा लेंगे। बी. पी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश हेतु निम्नलिखित तीन योग्यताओं के आधार पर निर्धारण होगा–(अ) सीनियर सैकण्डरी के कुल प्राप्तांक का 50 (ब) अभिरूचि परीक्षा के प्राप्तांक का 50 (स) बोनस अंक (अगर कोई हो तो) उपर्युक्त तीनों श्रेणी के अंकों के योग के प्रतिशत के आधार पर वरीयता निर्धारित की जायेगी।

4. अभिरूचि परीक्षा नहीं देने वाले प्रवेशर्थियों के नाम यद्यपि वरीयता सूची में सम्मिलित तो किये जायेंगे परन्तु उनका अंतिम प्रवेश निर्णय अभिरूचि परीक्षा के उपरान्त ही लिया जायेगा।

एम.पी.ए. में प्रवेश हेतु मापदण्ड

एम.पी.ए. कक्षा में प्रवेश व आरक्षण निदेशालय कॉलेज शिक्षा, राजस्थान जयपुर की प्रवेश नीति 2024–25 एवं विश्वविद्यालय के आधार पर होगा। बी.पी.ए., कण्ठ संगीत कक्षा में न्यूनतम अंक 50 प्रतिशत होना आवश्यक है। एस.सी./एस.टी./नॉन क्रीमीलेयर ओ.बी. सी. के लिये 45 प्रतिशत अंक होना आवश्यक है। –प्रवेश नीति

एम.पी.ए. में प्रवेश हेतु संस्थान का गायन विभाग प्रवेश समिति प्रवेशार्थी की अभिरूचि परीक्षा आयोजित करेगा, प्रवेश हेतु वरीयता का निर्धारण निम्नलिखित आधार पर किया जायेगा।

1. बी.पी.ए. में कुल प्राप्तांक का 30 प्रतिशत

2. प्रायोगिक परीक्षा में कुल प्राप्तांक का 40 प्रतिशत

3. अभिरूचि परीक्षा का 30 प्रतिशत (अनिवार्य)

4. अभिरूचि परीक्षा नहीं देने वाले प्रवेशर्थियों के नाम यद्यपि वरीयता सूची में सम्मिलित तो किये जायेंगे परन्तु उनका अंतिम प्रवेश निर्णय अभिरूचि परीक्षा के उपरान्त ही लिया जायेगा।

आयुक्तालय द्वारा जारी प्रवेश नीति एवं समय–समय पर जारी प्रवेश कार्यक्रम हेतु विभाग की वेबसाईट : https:@@hte-rajasthan-gov-in/dept/dce का अवलोकन करें।

राजस्थान संगीत संस्थान

डिप्लोमा कक्षाओं में प्रवेश हेतु मापदंड

संगीत मध्यमा :

1. प्रथम वर्ष में प्रवेश हेतु प्रवेशार्थी नवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिये। प्रवेश से पूर्व संगीत की अभिरुचि परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य है।
2. मध्यमा प्रथम वर्ष के समकक्ष योग्यता रखने वाले छात्र को समकक्ष परीक्षा एवं कक्षा 10वीं की अंकतालिका प्रस्तुत करने पर मध्यमा द्वितीय वर्ष में सीधे प्रवेश (नवीन) दिया जा सकेगा।
3. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर, राजस्थान या अन्य मान्यता प्राप्त बोर्ड से ग्यारहवीं कक्षा संगीत ऐच्छिक विषय के साथ अथवा समकक्ष योग्यता उत्तीर्ण विद्यार्थी को संगीत की मौखिक प्रवेश परीक्षा प्रायोगिक के पश्चात् मध्यमा तृतीय वर्ष में सीधे प्रवेश (नवीन) दिया जा सकेगा।
4. मध्यमा तृतीय वर्ष में प्रवेश की न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता ग्यारहवीं उत्तीर्ण आवश्यक है।

संगीत विशारद :

मान्यता प्राप्त बोर्ड से सीनियर सैकण्डरी (कक्षा–12) परीक्षा तथा संगीत की निमनलिखित योग्यताओं में से कोई योग्यता प्राप्त की हुई परीक्षा अथवा मान्य समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण हो जिसमें 40 प्रतिशत अंक अनिवार्य है, ऐसे विद्यार्थी को संगीत विशारद प्रथम वर्ष में प्रवेश दिया जा सकेगा।

1. संगीत मध्यमा, शिक्षा विभागीय परीक्षायें कॉलेज शिक्षा, जयपुर, राजस्थान।
2. संगीत भूषण, शिक्षा विभागीय परीक्षायें, बीकानेर, राजस्थान।
3. संगीत मध्यमा, इन्द्रा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़।
4. संगीत मध्यमा, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल, मुम्बई।
5. प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद का त्रि–वर्षीय डिप्लोमा।
6. संगीत मध्यमा भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय, लखनऊ।
7. विशारद द्वितीय में सीधे प्रवेश हेतु अर्हकारी परीक्षा (विशारद प्रथम वर्ष, कॉलेज शिक्षा राज.) में 60 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण।
8. ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने किसी 10+2 पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सीनियर उच्च माध्यमिक परीक्षा संगीत वैकल्पिक विषय के साथ लेकर उत्तीर्ण की हो ऐसे विद्यार्थियों को भी अभिरूचि परीक्षा के उपरांत विशारद प्रथम वर्ष में प्रवेश दिया जा सकेगा।

संगीत निपुण :

किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय की स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की हो तथा संगीत की निम्नलिखित योग्यताओं में से कोई एक योग्यता रखता हो, ऐसे विद्यार्थी को संगीत निपुण, प्रथम वर्ष में प्रवेश दिया जा सकेगा।

1. किसी मान्य विश्वविद्यालय की स्नातक उपाधि, जिसमें भारतीय संगीत वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो।
2. संगीत विशारद, शिक्षा विभागीय परीक्षा, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान से उत्तीर्ण की हो।
3. विद् परीक्षा, इन्द्रा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़ से उत्तीर्ण की हो।
4. संगीत विशारद, भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय, लखनऊ से उत्तीर्ण की हो।
5. संगीत विशारद, अखिल भारतीय गांधर्व मण्डल, मुम्बई से उत्तीर्ण की हो।
6. संगीत प्रभाकर, शिक्षा विभागीय परीक्षा, बीकानेर, राजस्थान से उत्तीर्ण की हो।
7. प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद का 6 वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किया हो।

नोटः 1. संगीत मध्यमा, संगीत विशारद, संगीत निपुण में प्रवेश के लिए योग्यताएँ रखने वाले विद्यार्थियों को प्रवेश उसी विषय में दिया जायेगा। जिस विषय में उसने प्रायोगिक परीक्षा उत्तीर्ण की होगी। **2. संस्थान में अध्ययन के लिए केवल एक विषय में प्रवेश दिया जा सकेगा। 3. उपर्युक्त डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आयु सीमा की कोई बाध्यता नहीं है।**

राजस्थान संगीत संस्थान

प्रवेश प्रक्रिया

(डिग्री हेतु)

1. प्रवेश फार्म के साथ निम्न अभिलेख आवश्यक रूप से लगाये जाने चाहिए–

   (i) अंतिम अर्हकारी परीक्षा की अंकतालिका।

   (ii) सैकण्डरी परीक्षा की अंकतालिका अथवा प्रमाण–पत्र (जिसमें जन्म तिथि अंकित हो।)

   (iii) अंतिम शिक्षण संस्था से स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र (केवल बी.पी.ए/एम. पी.ए.) के विद्यार्थियों के लिए।

   (iv) अंतिम शिक्षण संस्था से चरित्र प्रमाण–पत्र (केवल बी.पी.ए./एम.पी.ए.) के विद्यार्थियों के लिए।

   (v) जाति प्रमाण–पत्र।

(अप) नियोक्ता द्वारा अनापत्ति प्रमाण–पत्र (सेवारत प्रवेशार्थियों के लिये)

2. किसी भी प्रकार के अपूर्ण फार्म स्वीकार नहीं किये जायेंगे।
3. अभिरूचि परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात ही विद्यार्थी प्रवेश हेतु योग्य माना जायेगा।
4. प्रवेश योग्य छात्रों की सूची निर्धारित तिथि को सूचना पट्ट पर लगा दी जायेगी।
5. प्रवेश योग्य छात्र निर्धारित तिथि तक फीस जमा करावें। निर्धारित तिथि तक फीस जमा नहीं कराने पर प्रवेश स्वतः ही निरस्त हो जायेगा तथा योग्यता सूची में वरीयता क्रम से योग्यता प्रवेशार्थियों को प्रवेश दे दिया जायेगा।
6. प्रवेश के लिए निर्धारित अंतिम तिथि के पश्चात् किसी भी छात्र को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
7. संस्थान में प्रवेशित छात्र/छात्राएँ कार्यालय से अपना पहचान–पत्र प्राप्त करें। पहचान–पत्र विद्यार्थी हमेशा अपने पास रखें तथा मांगने पर उसे दिखायें।
8. संस्थान सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचनाएँ सूचना पट्ट पर लगायी जाती हैं, अतः छात्र–छात्रायें समय–समय पर सूचना पट्ट देखते रहें।

प्रवेश निर्देश

1. अनुत्तीर्ण तथा ड्रॉपर विद्यार्थियों को एक्स विद्यार्थी के रूप में परीक्षा में बैठने की अनुमति होगी।
2. यदि विद्यार्थी किसी दूसरे विश्वविद्यालय, बोर्ड, संस्थान में अध्ययरत हैं तथा उसे इस संस्था के परीक्षा कार्यक्रम से कोई भी व्यवधान होता है, तो संस्थान उत्तरदायी नहीं होगा।
3. प्रवेश के समय अनुसूचित जाति, जनजाति के विद्यार्थियों को यह घोषणा पत्र भरना होगा कि वे समाज कल्याण विभाग से छात्रवृत्ति प्राप्त कर रहे हैं अथवा नहीं कर रहे हैं।
4. अंकों की पुनः गणना करवाने पर परीक्षा परिणाम घोषित होने के 10 दिन तक प्रवेश ले सकते हैं।
5. विद्यार्थी अन्य विश्वविद्यालय से डिग्री कोर्स में अध्ययरत रहते हुए भी संगीत संस्थान के डिप्लोमा कक्षाओं में प्रवेश ले सकते हैं।
6. इस संस्थान के डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अन्य संस्थानों के पाठ्यक्रमों की समकक्षता की जानकारी हेतु विवरणिका के पृष्ठ संख्या 06 से 10 तक पढ़ें।

– – – – – – – – – – – – – –

आरक्षण सम्बन्धी नियम

प्रत्येक संकाय की स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर में प्रवेश हेतु अनुसूचित जाति/जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग (चिकनी परत को छोड़कर), विशेष पिछड़ा वर्ग के अभ्यार्थियों के लिये क्रमशः 16 प्रतिशत, 12 प्रतिशत, 21 प्रतिशत एवं 1 प्रतिशत स्थान आरक्षित रहेंगे। पिछड़ा वर्ग को प्राप्त 21 प्रतिशत आरक्षण में विशेष पिछड़ा वर्ग भी सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त विशेष पिछड़ा वर्ग के लिये 1 प्रतिशत आरक्षण अलग से प्रावधान देय है। विकलांग एवं कश्मीरी विस्थापितों के लिए क्रमशः 3 प्रतिशत एवं 1 सीट पर आरक्षण सामान्य वर्ग सहित सभी आरक्षित वर्गों में होगा। 10 प्रतिशत आरक्षण ई. डब्ल्यू. एस. के लिए होगा।

नोट : इसके अतिरिक्त वैश्ज्ञ एव। आरक्षण सम्बन्धी सभी नियम आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा की प्रवेश नीति 2024–25 के लागू होंगे।

राजस्थान संगीत संस्थान

पुस्तकालय

पुस्तकालय में लगभग 6000 पुस्तकें हैं। यहाँ संगीत के विषय की अधिकतम पुस्तकों का संग्रहालय है। संगीत विषय की सन्दर्भ एवं दुर्लभ पुस्तकें उपलब्ध हैं।

संगीत में उच्च स्तरीय शिक्षण हेतु भी पुस्तकें पुस्तकालय में हैं।

संगीत विषय की शोध पत्रिकाएं भी पुस्तकालय में मंगवायी जाती है। दैनिक पत्र–पत्रिकाओं का लाभ भी पुस्तकालय द्वारा दिया जाता है। पुस्तकालय निधि की सुरक्षा/संधारण एवं सदुपयोग सर्वोपरि है।

– – – – – – – – – – – – – –

पुस्तकालय के नियम

1. पुस्तकें आदान–प्रदान का समय प्रातः 10.00 बजे से दोपहर 3.00 बजे होगा।
2. पुस्तकें 2 से अधिक निगमित नहीं होगी। एक विद्यार्थी को पुस्तकालय में दो कार्ड आवंटित किये जायेंगे। एक कार्ड पर एक ही पुस्तक निर्गमित की जायेगी।
3. पुस्तकें क्षतिग्रस्त होने पर पूर्ण जिम्मेदारी विद्यार्थी स्वयं की होगी। पुस्तकें पुस्तकालय से अच्छी तरह देख कर लें।
4. विद्यार्थियों को पुस्तकालय से पुस्तकें 15 दिन के लिए ही देय होंगी। 15 दिन के बाद विलम्ब शुल्क 1/–रु. प्रतिदिन का देय होगा।
5. विद्यार्थियों को पत्रिकाएं निर्गमित नहीं होगी।
6. विद्यार्थी अपने खाते की पुस्तकें अन्य विद्यार्थी को न दें।
7. पुस्तकें परीक्षा प्रारम्भ के 10 दिन पूर्व में जमा करवा कर, पुस्तकालय से अदेय प्रमाण–पत्र प्राप्त करें।
8. 200/–रु. से अधिक मूल्य की संदर्भित पुस्तकें निर्गमित नहीं होगी। यदि निर्गमित होगी तो उसकी मूल्य राशि धरोहर के रूप में जमा करानी होगी।
9. अदेय प्रमाण–पत्र के अभाव में परीक्षा/परीक्षा परिणाम भी प्रभावित किया जा सकता है।

छात्रवृत्तियाँ

ललित कला छात्रवृत्तिः राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर से मध्यमा/विशारद में 60 प्रतिशत या अधिक अंकों से उत्तीर्ण होकर विशारद/निपुण में प्रवेश लेने पर यह छात्रवृतियाँ आयुक्तालय द्वारा प्रदान की जाती है। जिन छात्र/छात्राओं के अभिभावक आयकर दाता नहीं हैं, केवल वे ही छात्र/छात्राएँ इस छात्रवृत्ति के हकदार होंगे।

समाज कल्याण छात्रवृत्ति : समाज कल्याण विभाग द्वारा मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्ति अनुसूचित जाति और जन जाति के छात्रों को दी जाती है। निम्न दशाओं में यह देय नहीं होगी :–

(क) शिक्षा का एक चरण उत्तीर्ण करने के बाद शिक्षा के उसी चरण में किसी दूसरे विषय में अध्ययन करने पर (ख) पूर्ण कालिक सेवारत छात्र। (ग) अंशकालीन पाठ्यक्रमों के लिए देय नहीं। (घ) दो से अधिक

राजस्थान संगीत संस्थान

सामान्य नियम

1. कोई भी नियमित/स्वयंपाठी छात्र–छात्रा संस्थान में उपलब्ध विषयों में से केवल एक ही विषय चुनकर परीक्षा दे सकता है। एक से अधिक विषयों से परीक्षा फार्म भरने पर छात्र को उस वर्ष की परीक्षा से वंचित किया जा सकता है।
2. विद्यार्थियों की कुल शिक्षण दिवसों में से 75 प्रतिशत उपस्थित आवश्यक है। विद्यार्थियों को प्रतिदिन के लिए निश्चित कालांशों में उपस्थित रहने पर ही उस दिन की उपस्थिति प्रदान की जायेगी।
3. अस्वस्थता के कारण अथवा किसी विशेष परिस्थिति में विद्यार्थी को अवकाश दिया जा सकेगा। अस्वस्थता के कारण अवकाश चाहने वाले विद्यार्थी को किसी मान्य चिकित्सक का प्रमाण–पत्र प्रस्तुत करना होगा। ऐसे अवकाशों की अवधि, कुल अध्यापन दिवसों की संख्या का 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चहिए।
4. लगातार 10 दिन तक कक्षा में उपस्थित न रहने पर नाम काट दिया जायेगा। नाम काटने के बाद पुनः प्रवेश कक्षाध्यापक की व प्राचार्य की अनुमति व अभिशंसा के बाद ही दिया जा सकेगा।
5. संस्थान द्वारा समय–समय पर आयोजित सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रत्येक विद्यार्थी को उपस्थित रहना अनिवार्य है।
6. प्रत्येक विद्यार्थी को संगीत संस्थान के नियमों का तथा अनुशासन सम्बन्धी नियमों का पालन करना होगा।
7. संस्थान द्वारा समय–समय पर आयोजित सह शैक्षणिक गतिविधियों में प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेना आवश्यक है।
8. ऐसे विद्यार्थी जो प्रवेश के समय प्रायोगिक अथवा सैद्धान्तिक परीक्षा में पूरक घोषित हुए हैं, उन्हें अग्रिम कक्षा में प्रवेश दिया जा सकेगा। यदि वे पूरक परीक्षा में अनुत्तीर्ण घोषित होते हैं, तो उनका प्रवेश स्वतः ही निरस्त माना जायेगा तथा कॉशन मनी के अतिरिक्त किसी भी प्रकार की फीस लौटाई नहीं जायेगी।
9. संस्थान में प्रवेश मिल जाने के बाद किसी विद्यार्थी का आचरण आपत्तिजनक पाया गया, या उसने कॉलेज का अनुशासन भंग किया या उसके प्रवेश आवेदन पत्र में कोई असत्य सूचना पायी गई, कॉलेज के नियमों का उल्लंघन किया, अपने पिता/संरक्षक के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति के हस्ताक्षर करवाये अथवा स्वय ने किये, तो यह कार्य अत्यन्त अवांछनीय होने के कारण दण्डनीय समझा जायेगा और उसका प्रवेश तुरन्त रद्द कर दिया जावेगा।
10. ऐसी परिस्थितियाँ जो उपरोक्त नियमों की परिसीमा में नहीं आती, उनमें आयुक्तालय, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान के सत्र 2024–25 के लिये घोषित प्रवेश नीति के अनुरूप निर्णय लिया जावेगा।
11. प्रवेश सम्बन्धी सभी प्रकरणों में अन्तिम निर्णय प्राचार्य के अधिकार क्षेत्र में होगा।

नोट : 1. डिग्री पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु अहर्कारी परीक्षा की मूल अंकतालिका, टी.सी. एवं सी.सी. की मूल प्रतियों के साथ सर्व्म्ज्ञथ्ज्ञत फोटो स्टेट प्रतियां फीस जमा करवाते समय जमा करवानी होगी। डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में फीस जमा करवाने से पूर्व अहर्कारी परीक्षा की मूल अंकतालिका की सर्व्म्ज्ञथ्ज्ञत फोटो स्टेट प्रति जमा करवानी होगी। 2. निःशक्तजन / दृष्टि बाधित परीक्षार्थी को सक्षम अधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर श्रुति लेखक जिसकी अकादमिक योग्यता मध्यमा के लिये 10वीं एवं बीपीए /एमपीए/विशारद/निपुण पाठ्यक्रमों के लिए 12वीं से अधिक न हो। साथ ही मध्यमा परीक्षार्थी के लिए श्रुति लेखक की सांगीतिक योग्यता संबंधित परीक्षार्थी की कक्षा से कम हो तथा बीपीए/एमपीए/विशारद/निपुण के परीक्षार्थियों के लिए श्रुति लेखक की सांगीतिक योग्यता अधिकतम मध्यमा ही हो।

राजस्थान संगीत संस्थान

विद्यार्थियों हेतु अनुशासन सम्बन्धी निर्देश

विद्यार्थीगण हेतु उद्देशित उत्तम शिक्षण / अध्ययन एवं सर्वांगीण विकास के लिए राजस्थान संगीत संस्थान सतत् प्रयासरत है। अतः आप प्रतिफल में अपेक्षित सकारात्मक एवं निषेधात्मक कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान रहें। प्राचार्य कक्ष में बिना अनुमति प्रवेश निषिद्ध है।

1. सूचना पट्ट एवं वाट्सएप ग्रुप का नियमित अवलोकन परमावश्यक है। इसके अभाव में किसी भी जानकारी की अनभिज्ञता का दायित्व स्वयं विद्यार्थी का होगा।
2. परिचय पत्र सदैव साथ रखिये खो जाने की स्थिति में नियमानुसार पुनः प्राप्त करे। इसके अभाव में अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी।
4. कार्यालय एवं कक्षाओं के बाहर शांन्ति बनाये रखने में सहयोग रहें।
5. संस्थान में किसी भी प्रकार के पोस्टर/विज्ञापन/कार्यक्रम सूचना प्राचार्य की पुर्वानुमति के पश्चात् ही मान्य होंगे।

नोट :–

1. परिचय पत्र शुल्क प्रवेश के समय देय होगा। परिचय पत्र खो जाने पर नॉन ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर पर शपथ एवं 50 रु. शुल्क देने पर ही नया परिचय पत्र जारी किया जायेगा।
2. कॉशन–मनी प्रथम प्रवेश पर ही देय होगी। संस्थान छोड़ने की तिथि से 3 वर्ष के पश्चात् वापिस न लिये जाने पर नियमानुसार राजकोष में जमा करा दी जायेगी। जिसका सम्पूर्ण दायित्व विद्यार्थी का होगा।

– – – – – – – – – – – – – –

एक विषय से दूसरे विषय में स्थानान्तरण

यदि किसी अभ्यार्थी का नाम एक से अधिक विषयों की प्रवेश सूची में आ जाता है तो वह इनमें से किसी भी विषय में शुल्क जमा करा कर प्रवेश ले सकता है यदि उसका नाम बाद में जारी की गयी किसी अन्य विषय की प्रवेश सूची में आता है तो उस विषय के 200 रु. स्थानान्तरण शुल्क जमा करवाकर प्रवेश ले सकेगा और उसके पूर्व में जमा कराया गया शुल्क समायोजित हो जायेगा। ऐसा स्थानान्तरण प्रवेश की अन्तिम तिथि से 15 दिन बाद तक ही स्वीकार्य होगा।

– – – – – – – – – – – – – –

छात्र–संघ

संस्थान में छात्रसंघ पदाधिकारियों का चुनाव संस्थान के छात्रसंघ संविधान के अनुसार प्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली द्वारा किया जाता है। इस सम्बन्ध में राज्य सरकार / आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान, जयपुर द्वारा समय–समय पर जारी किये जाने वाले निर्देशों की पालना भी की जाती है।

राजस्थान संगीत संस्थान

शुल्क विवरण

क्र.सं.	प्रवेश शुल्क विवरण	डिप्लोमा	बी.म्यूज.	एम.म्यूज
1.	प्रवेश शुल्क	2.00	2.00	2.00
2.	कॉशन मनी शुल्क	100.00	100.00	100.00
3.	समाज सेवा शुल्क	20.00	20.00	20.00
4.	छात्र सहायता शुल्क	20.00	20.00	20.00
5.	मनोरंजन शुल्क	50.00	50.00	50.00
6.	पुस्तकालय शुल्क	100.00	100.00	100.00
7.	पुस्तकालय टिकिट शुल्क	20.00	20.00	20.00
8.	शैक्षणिक परिषद शुल्क	25.00	25.00	25.00
9.	विकास शुल्क	200.00	200.00	200.00
10.	पत्रिका शुल्क	40.00	40.00	40.00
11.	आंतरिक परीक्षा शुल्क	100.00	100.00	100.00
12.	परिचय पत्र शुल्क	50.00	50.00	50.00
13.	सामान्य प्रयोजन शुल्क	20.00	20.00	20.00
14.	छात्रसंघ शुल्क	100.00	100.00	100.00
15.	संगीत समारोह, कार्यशालाएवं प्रतियोगी शुल्क	300.00	300.00	300.00
16.	खेलकूद	150.00	150.00	150.00
17.	वाद्य यन्त्र प्रयोगशाला	250.00	250.00	250.00
18.	महाविद्यालय विकास समिति शुल्क	2000.00	2200.00	2600.00
19.	ट्यूशन फीस (तालिकानुसार)			
20.	नामांकन शुल्क (केवल नवीन प्रवेश)	100.00	100.00	100.00
21.	कम्प्यूटर कौशल फीस	450.00	450.00	450.00
22.	बस दुर्घटना बीमा	20.00	20.00	20.00

प्रतिमाह लिये जाने वाले शिक्षण शुल्क का विवरण : यह प्रवेश के समय एक साथ लिया जायेगा–

क्र.सं.	विवरण	आयकर नहीं देने वाले		आयकर देने वाले	
		मासिक	वार्षिक	मासिक	वार्षिक
1.	मध्यमा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष	3.50	42.00	12.00	144.00
2.	विशारद प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष	4.50	54.00	15.00	180.00
3.	निपुण प्रथम एवं द्वितीय वर्ष	8.00	96.00	20.00	240.00
4.	बी. म्यूज, I, II,II, IV	4.50	54.00	15.00	180.00
5.	एम. म्यूज, I, II	8.00	96.00	20.00	240.00

नोटः

1. *यदि किसी विद्यार्थी को T.C.(Transfer Certificate)& C.C. (Character Certificate) प्राप्त करनी है इसके लिए शुल्क 100 रू.।*
2. *नामांकन शुल्क केवल नवीन प्रवेश पर देय होगा।*

परीक्षाओं का अंक विभाजन

संगीत मध्यमा से निपुण तक की कक्षाओं के सम्बन्ध में :–

(कंठ संगीत, वादन, तबला एवं नृत्य)

क्र.सं.	कक्षा का नाम परीक्षक द्वारा	सैद्धान्तिक (लिखित)	प्रायोगिक	मंच प्रदर्शन प्रायोगिक	योग प्रायोगिक	कुल योग
1.	संगीता मध्यमा (प्रथम वर्ष)	60	140	लागू नहीं	140	200
2.	संगीत मध्यमा (द्वितीय वर्ष)	60	140	लागू नहीं	140	200
3.	संगीत मध्यमा (तृतीय वर्ष)	100	200	लागू नहीं	200	300

क्र.सं.	कक्षा का नाम	सैद्धान्तिक (लिखित)	मुख्य प्रायोगिक (परीक्षक द्वारा)	प्रायोगिक मंच प्रदर्शन (परीक्षक द्वारा)	योग प्रायोगिक	कुल योग
1.	संगीत विशारद (प्रथम वर्ष)	100	250	50	300	400
2.	संगीत विशारद (द्वितीय वर्ष)	100	250	50	300	400
3.	संगीत विशारद (तृतीय वर्ष)	200 (100+100)	300	100	400	600

क्र.सं.	कक्षा का नाम	सैद्धान्तिक (लिखित)	मुख्य प्रायोगिक (परीक्षक द्वारा)	प्रायोगिक मंच प्रदर्शन (परीक्षक द्वारा)	योग प्रायोगिक	कुल योग
1.	संगीता निपुण (प्रथम वर्ष)	(125+125) 250	400	150	550	800
2.	संगीता निपुण (द्वितीय वर्ष)	(125+125) 250	400	150	550	800

राजस्थान संगीत संस्थान

क्र. सं.	संगीत मध्यमा प्रायोगिक परीक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष
1.	परीक्षार्थी की इच्छानुसार गाया जाने वाला राग	20	20	20
2.	परीक्षक की इच्छा का राग	20	20	20
3.	पाठ्यक्रम के रागों का ज्ञान	40	40	40
4.	बंदिशों का गायन, तराना, चतुरंग बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल आदि एवं वाद्य हेतु अन्य ताल में गत	20	20	20
5.	ध्रुपद–धमार गायन	–	10	10
6.	स्वरलिपि बनाना व गाना	–	–	10
7.	लोक संगीत	10	10	15
8.	ताल ज्ञान : ठेका हाथ से लगाना	20	20	25
9.	राष्ट्रीय गीत, भजन आदि/धुन	10	–	–
	योग	**140**	**140**	**200**

क्र. सं.	संगीत विशारद प्रायोगिक परीक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष
1.	परीक्षार्थी की इच्छानुसार गाया जाने वाला राग (विस्तृत गायकी सहित)	40	40	40
2.	परीक्षक की इच्छानुसार	40	40	40
3.	पाठ्यक्रम के रागों का ज्ञान, अलापों द्वारा राग विस्तार एवं बढ़त	50	50	50
4.	बंदिशों का गायन (तराना, चतुरंग छोटा ख्याल आदि) वाद्य हेतु अन्य ताल में गत	30	30	50
5.	ध्रुपद–धमार गायन	25	25	30
6.	स्वरलिपि बनाना व गाना	25	25	20
7.	लोक संगीत/धुन	15	15	20
8.	ताल ज्ञान (ठेका बजाना एवं लहकारी)	25	25	40
	योग	250	250	300
	मंच प्रदर्शन			
	बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, सुगम संगीत एवं उप शास्त्रीय संगीत	50	50	100
	कुल योग	**300**	**300**	**400**

क्र. सं.	संगीत निपुण प्रायोगिक परीक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष
1.	अपना वाद्य मिलाना	30	30
2.	अपनी इच्छा का राग	50	50
3.	परीक्षक द्वारा पूछा गया राग	50	50
4.	रागों का तुलनात्मक ज्ञान	60	60
5.	बन्दिशों का गायन/वाद्य हेतु अन्य तालों में गतें बजाना	60	60
6.	ताल ज्ञान	50	50
	योग	300	300
मौखिक परीक्षा : इस परीक्षा में विभिन्न कलाकारों के रिकार्ड बजाकर उनका प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं स्वरलिपि ज्ञान जांचा जायेगा। यह परीक्षा 1 घण्टे की होगी।		100	100
मंच प्रदर्शन : इसमें विद्यार्थी को 45 मिनट का कार्यक्रम श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करना होगा जिसमें उपशास्त्रीय संगीत एवं सुगम गायन/वादन भी सम्मिलित होगा।		150	150
कुल योग		**550**	**550**

राजस्थान संगीत संस्थान

पाठ्यक्रम

संगीत मध्यमा प्रथम वर्ष

कंठ संगीत एवं वादन (सितार, वायलिन)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 60 न्यूनतम :

(1) पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान : स्वर, अलंकार, शुद्ध–विकृत स्वर, आरोह–अवरोह, पकड़, स्थायी अन्तरा, सप्तक (मन्द्र, मध्य, तार) वादी, संवादी, वर्ण, जाति (औड़व, षाड़व, सम्पूर्ण) थाट, लय (विलम्बित, मध्य द्रुत) ताल, मात्रा, समय, विभाग, खाली, ठेका, आवर्तन।

(2) निर्धारित रागों का परिचय।

(3) स्वरांकन प्रणाली का साधारण ज्ञान।

(4) निर्धारित तालों को लिपिबद्ध करने का अभ्यास–त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा।

(5) स्वर समूहों द्वारा राग पहचानना।

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 140 न्यूनतम : 50

(1) इस वर्ष के पाठ्यक्रम के रागों में किन्हीं 10 अलंकारों का अभ्यास।

(2) इस वर्ष के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित राग अभ्यास हेतु निर्धारित हैं। इन रागों में आरोह–अवरोह एवं पकड़ 1 सरगम गीत, लक्षण गीत, तथा दो छोटे ख्याल अथवा वाद्य के विद्यार्थियों के लिये 2 रजाखानी गते, 4–4 आलाप तानों सहित तैयार करें– पाठ्यक्रम की राग – **यमन, बिलावल, काफी, खमाज, भैरव, आसावरी, भूपाली।**

(3) शुद्ध–विकृत स्वरों को पहचानना, तानों तथा आलाप द्वारा रागों की पहचान।

(4) निम्नलिखित तालों का पूर्ण विवरण तथा हाथ से ताली लगाने का अभ्यास–
त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा।

(5) राष्ट्रगीत, राष्ट्रभक्ति गीत, भजन आदि का गायन।

राजस्थान संगीत संस्थान

विभिन्न कक्षाओं हेतु निर्धारित कलांश

(प्रति सप्ताह)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

मध्यमा

	कक्षा का नाम	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक	कुल योग
1.	संगीत मध्यमा (प्रथम वर्ष)	2	6	8
2.	संगीत मध्यमा (द्वितीय वर्ष)	2	6	8
3.	संगीत मध्यमा (तृतीय वर्ष)	2	6	8

विशारद

	कक्षा का नाम	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक	कुल योग
1.	संगीत विशारद प्रथम वर्ष	3	9	12
2.	संगीत विशारद (द्वितीय वर्ष)	3	9	12
3.	संगीत विशारद (तृतीय वर्ष)	3	9	12

निपुण

	कक्षा का नाम	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक	कुल योग
1.	संगीत निपुण (प्रथम वर्ष)	4	12	16
2.	संगीत निपुण(द्वितीय वर्ष)	4	12	16

डिग्री पाठ्यम

	कक्षा का नाम	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक	कुल योग
1.	बी.पी.ए. (प्रथम वर्ष)	8	16	24
2.	बी.पी.ए. (द्वितीय वर्ष)	8	18	26
3.	बी.पी.ए. (तृतीय वर्ष)	8	18	26
4.	बी.पी.ए. (चतुर्थ वर्ष)	8	18	26
5.	एम.पी.ए. (प्रथम वर्ष)	8	18	26
6.	एम.पी.ए. (द्वितीय वर्ष)	8	18	26

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत मध्यमा द्वितीय वर्ष

कंठ संगीत एवं वादन (सितार, वायलिन)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 60 न्यूनतम : 22

(1) पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान : नाद, नाद की उत्पत्ति, नाद के भेद, नाद की विशेषताऐं, संगीत, स्वर और थाट, राग, वर्ण, मींड, कण–स्वर, संचारी, आभोग, पूर्वांग–उत्तरांग, भातखण्डे जी के 10 थाटों का ज्ञान।

(2) गीत के प्रकार – सरगमगीत, लक्षणगीत, ख्याल, ध्रुपद, धमार, तराना।

(3) निर्धारित रागों की जानकारी, परिचय।

(4) लिखे हुए स्वर समूहों द्वारा राग पहचानना।

(5) अभ्यास क्रम के तालों को लिपिबद्ध करना– चौताल, धमार, रूपक, एकताल और झपताल।

(6) भातखण्डे एवं पलुस्कर स्वरांकन पद्धतियों का परिचय।

(7) संगीत की उत्पत्ति।

(8) पंडित पलुस्कर जी एवं पंडित भातखण्डे जी का संक्षिप्त परिचय।

प्रयोगिक :

पूर्णांक : 140 न्यूनतम : 50

(1) निम्नलिखित थाटों में 10 अलंकारों का अभ्यास :– बिलावल, कल्याण, खमाज, काफी, भैरव।

(2) प्रथम वर्ष के रागों के साथ–साथ निम्नलिखित रागों का अभ्यास–वृन्दावनी सारंग, बागेश्री, अल्हैया बिलावल, देस, भैरवी और दुर्गा।

(अ) प्रत्येक राग में आरोह, अवरोह, पकड़, सरगमगीत, लक्षणगीत एवं छोटा ख्याल, पांच तानों एवं पांच आलाप सहित।

(ब) यमन, भैरव, रागों में एक–एक बड़ा ख्याल 5 तानों एवं 5 अलापों सहित।

(स) उपर्युक्त किसी भी राग में एक ध्रुपद तथा एक धमार दुगुन सहित एवं वाद्यों के विद्यार्थियों के लिए तीन ताल के अलावा अन्य ताल में गत।

(3) निम्नलिखित तालों का अभ्यास एवं ज्ञान– चौताल, धमार, रूपक, एकताल और झपताल।

उपरोक्त तालों को तबले पर पहचानना तथा हाथ से ताल लगाकर दुगुन करने का अभ्यास।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत मध्यमा तृतीय वर्ष

कंठ संगीत एवं वादन (सितार, वायलिन)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(1) प्रथम वर्ष के सभी पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत अध्ययन। श्रुति, वादी स्वर का राग से सम्बन्ध, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, कम्पन, थाट एवं राग के नियम, गणितानुसार थाटों की रचना, भातखण्डे जी के 10 थाट, संधिप्रकाश राग, पूर्वांग उत्तरांग रागों का स्वरों के अनुसार समय विभाजन, रागरचना, थाटोत्पत्ति।

(2) पूर्व वर्षों के व इस वर्ष के रागों का विस्तृत वर्णन तथा उनके आलाप लिखना। रागों के आलापों के उदाहरणों सहित समानता–विभिन्नता दर्शाना, तानों के प्रकार।

(3) ध्रुपद, धमार को ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन, लयकारियों में लिखना / वाद्य के विद्यार्थी कोई एक गत रूपक अथवा एकताल में लिखें।

(4) भातखण्डे एवं पलुस्कर स्वर लिपियों का पूर्ण ज्ञान तथा किसी भी गीत के दोनों पद्धतियों में लिखना।

(5) जीवनियाँ : स्वामी हरिदास, अमीर खुसरो।

(6) उत्तर तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धतियों के स्वर–सप्तक का साधारण ज्ञान।

(7) ताल–दीपचन्दी, तीव्रा, तिलवाड़ा, सूलताल की ठाह, दुगुन, चौगुन।

प्रयोगिक :

पूर्णांक : 200 न्यूनतम : 72

(1) स्वर ज्ञान–शुद्ध विकृत स्वरों की पूरी पहचान, गले के कण, खटके, मुर्की लगाने का अभ्यास, आलापों में गमक, मींड का प्रयोग, राग विस्तार, में अलंकारों का कुशलतापूर्वक प्रयोग

(2) किन्हीं चार रागों में एक–एक बड़ा ख्याल, स्वतन्त्र रूप से आलाप करते हुए मुखड़ा पकड़ने का अच्छ अभ्यास होना चाहिए – मालकोंस, भीमपलासी, केदार, जौनपुरी।

(3) निम्न रागों का अध्ययन– कलिंगड़ा, तोड़ी, तिलक कामोद, सोहनी, बागेश्री, बिहाग, वृन्दावनी सारंग।

(4) किसी भी राग में सुगम गीत अथवा भजन गायन। (5) पाठ्यक्रम के रागों में से 1 राग में ध्रुपद, 1 में धमार दुगुन, चौगुन सहित एवं 1 राग में तराना गाने का अभ्यास एवं वाद्य के विद्यार्थियों के लिए 3 ताल के अलावा अन्य ताल में गत बजाने का अभ्यास।

(6) राग को पहचानना।

(7) ताल–दीपचंदी, तीव्रा, तिलवाड़ा, सूलताल। इन ठेकों को हाथ से ताली देकर दुगुन, चौगुन करना तथा तबले पर पहचानना एवं बजाना।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत विशारद प्रथम वर्ष

कंठ संगीत एवं वादन (सितार, वायलिन)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(1) अभ्यास क्रम के गीतों को स्वरलिपि में लिखना तथा ध्रुपद, धमार को दुग्गुन, तिगुन, चौगुन में लिखना।

(2) इस वर्ष के रागों मारवा, बहार, शुद्ध कल्याण, हिण्डोल, गौड़ सारंग, देशकार, पूर्वी, हमीर का विस्तार सहित पूर्ण विवरण।

(3) निम्नलिखित विषयों का ज्ञान–तानपूरे को मिलाना, थाट और राग के नियम, 22 श्रुतियों का 7 स्वरों में विभाजन, राग जाति, एक थाट से उत्पन्न होने वाले रागों की संख्या व उनके बारे में जानकारी। तानों के प्रकार, रागों का वर्गीकरण, कोमल रे–ध, शुद्ध रे–ध एवं कोमल ग–नि वाले राग।

(4) पाठ्यक्रम के रागों की पहचान।

(5) पाठ्यक्रम के तालों को ठाह, दुगुन, चौगुन में लिखना।

(6) जीवनियाँ : मानसिंह तोमर, वजीर खाँ, हृदयनारायण देव, वी.जी. जोग (वायलिन) पं. रामनारायण (सारंगी), पं. रविशंकर (सितार)

प्रयोगिक : (दो पेपर होंगे)

(अ) मुख्य प्रायोगिक

पूर्णांक : 250 न्यूनतम : 90

(1) अपने वाद्य को मिलाने का अभ्यास।

(2) अभ्यास में आए सभी राग पहचानना।

(3) पाठ्यक्रम का ताल–आड़ा चौताल, पंजाबी, चाचर, झूमरा। इनमें ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन हाथ पर ताल लगाकर बताना, तबले पर तीन ताल बजाने का अभ्यास।

(4) अभ्यास के राग : मारवा, बहार, शुद्ध कल्याण, हिण्डोल, गौड सारंग, देशकार, पूर्वी, हमीर। (क) उक्त निर्धारित सभी रागों में से किन्हीं चार रागों में एक बड़ा, एक छोटा ख्याल, सरगम–गीत, शेष सभी मे छोटा ख्याल आना आवश्यक है। वादन के विद्यार्थियों को ख्याल के स्थान पर मसीतखानी एवं रजाखानी गतें बजाने का अभ्यास होना चाहिए। (ख) किन्हीं दो रागों में ध्रुपद व दो रागों में धमार, दुगुन, चौगुन लयकारी सहित गाने का अभ्यास वाद्य के विद्यार्थियों को तीन ताल के अतिरिक्त अन्य तालों में दो गतें बजाने का अभ्यास।

(ग) किन्हीं दो रागों में दो लक्षण गीत/भजन/धुन।

(ब) मंच प्रदर्शन। पूर्णांक : 50 न्यूनतम : 18

संगीत विशारद द्वितीय वर्ष

कंठ संगीत एवं वादन (सितार, वायलिन)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(1) पाठ्यक्रम में आये हुए सभी रागों कामोद, छायानट, शंकरा, जैजैवंती, रामकली, पूरिया धनाश्री, मुल्तानी, तोड़ी एवं तालों में पंचम सवारी, फरोदस्त, धुमाली का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।

(2) जाति गान और उसकी विशेषतायें।

(3) राग रागिनी पद्धति के गुण–दोष।

(4) विभिन्न मतानुसार श्रुति स्वर विभाजन का अध्ययन।

(5) पाठ्यक्रमों की बन्दिशों/गतों को स्वरलिपि में लिखना।

(6) षड्ज–पंचम तथा षड्ज–मध्यम भाव, संवाद सम्बन्धी जानकारी।

(7) पारिभाषित शब्द : मार्गी, देशी संगीत, कलावन्त, पंडित, वाग्गेयकार, नायक, ग्रह, अंश, न्यास, विन्यास, विश्रान्ति स्वर, वाणी (वाणियाँ), गमक व उनके प्रकार, निबद्ध–अनिबद्ध गान, नायकी– गायकी, ग्राम, मूर्च्छना, आन्दोलन।

(8) उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय संगीत तथा ताल पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।

(9) जीवनियाँ : तानसेन, गोपाल नायक, अल्लादिया खां (गायन), अलाउद्दीन खां (सितार), श्रीधर पारसेकर (वायलिन), बड़े गुलाम साबिर खां (सारंगी)।

प्रायोगिक : (दो पेपर होंगे)

(अ) मुख्य प्रायोगिक **पूर्णांक : 250 न्यूनतम : 90**

(1) पाठ्यक्रम के राग : कामोद, छायानट, शंकरा, जैजेवन्ती, रामकली, पूरिया धनाश्री, मुल्तानी और तोड़ी। (अ) उपर्युक्त में से किन्हीं चार रागों में एक बड़ा और एक छोटा ख्याल अथवा मसीतखानी एवं रजाखानीगत। शेष सभी रागों में छोटा ख्याल या रजाखानीगत।

(ब) प्रत्येक राग में एक सरगम गीत।

(स) किन्हीं दो रागों में लक्षण गीत।

(द) किन्हीं दो रागों में ध्रुपद एवं दो रागों में धमार, दुगुन, तिगुन, चौगुन, लयकारी सहित। वाद्य के विद्यार्थियों को तीन ताल के अतिरिक्त अन्य तालों में 1–1 गत बजाने का अभ्यास।

(2) कठिन स्वर समूहों द्वारा राग को पहचानना।

(3) निम्न तालों का लेखन एवं प्रस्तुतीकरण दुगुन, तिगुन, चौगुन, लयकारी सहित – पंचम सवारी,फरोदस्त, धुमाली।

(ब) मंच प्रदर्शन। पूर्णांक : 50 न्यूनतम : 18

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत विशारद तृतीय वर्ष

कंठ संगीत एवं वादन (सितार, वायलिन)

सैद्धान्तिक : (दो पेपर होंगे)

(प्रथम पश्न–पत्र)

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(1) इस वर्ष के लिए निर्धारित अभ्यास क्रम में रागों बसन्त, परज, ललित, पूरिया, गौड मल्हार, मियां मल्हार, दरबारी, अड़ाना, श्री का अल्पत्व–बहुतव तथा अविर्भाव तिरोभाव सहित आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक विस्तृत अध्ययन।

(2) लिखे हुए कठिन स्वरों द्वारा राग को पहचानना।

(3) अपने पाठ्यक्रम की बंदिशों को लिपिबद्ध करना तथा ध्रुपद, धमार को दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आड़ लय में लिखने का अभ्यास, वाद्य के विद्याथियों के लिए त्रिताल के अलावा किसी अन्य ताल में रचना लिपिबद्ध करना।

(4) पाठ्यक्रम में आए तालों को विभिन्न लयकारी में लिखना–मत्ततात एवं लक्ष्मीताल 18 मात्रा, शिखर 17 मात्रा, ब्रह्म 28 मात्रा।

(5) तालों का तुलनात्मक तथा विस्तृत अध्ययन अपने पाठ्यक्रमानुसार।

(6) परिभाषायें : चल एवं अचल थाट, आभिर्वाव–तिरोभाव, मसीतखानी, रजाखानी गत, मुर्की, कडजुला व पपीहा का तार, ठोक, आलप्तिगान, विदारी, रागालाप, रूपकालाप।

(7) पं. अहोबल द्वारा वीणा के तार पर स्वर स्थापना।

(द्वितीय पश्न–पत्र)

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(1) संगीत का संक्षिप्त इतिहास।

(2) अपने से सम्बन्धित घरानों का विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन।

(3) परिभाषाएँ : ग्राम, मूर्छना, थाट, श्रुति, मेजरटोन, माइनर टोन, सेमी टोन, सच्चा स्वर सप्तक।

(4) संगीत रत्नाकर का दश विधि राग वर्गीकरण।

(5) स्टाफ नोटेशन एवं भारतीय स्वरांकन पद्धतियाँ।

(6) भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण।

(7) हिन्दुस्तानी संगीत के गीत प्रकारों की संक्षिप्त जानकारी

राजस्थान संगीत संस्थान

(अ) प्रयोगिक : (दो पेपर होंगे)

पूर्णांक : 300 न्यूनतम : 108

(1) पाठ्यक्रम के राग : बसंत, परज, ललित, पूरिया, गौडमल्हार, मियां मल्हार, दरबारी, अड़ाना, श्री।

(अ) किन्हीं 4 रागों में बड़ा व छोटा ख्याल गाना अथवा मसीतखानी व रजाखानी गत बजाने का अभ्यास।

(ब) सभी रागों में छोटा ख्याल / रजाखानी गत।

(स) पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में ध्रुपद, एक में धमार, दुगुन, तिगुन, चौगुन, लयकारियों सहित तथा तराना गाने का अभ्यास। वाद्य के विद्यार्थियों को तीन ताल के अतिरिक्त झपताल एवं आड़ा चौताल में गतें बजाने का अभ्यास ।

(2) कठिन स्वर समुदायों को सुनकर राग को पहचानना।

(3) पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों को सम्पूर्ण गायकी बाज सहित गाने /बजाने का अभ्यास।

(4) तालें : मत्ततताल 18 मात्रा, शिखर 17 मात्रा, ब्रह्म 28 मात्रा तथा लक्ष्मी ताल 18 मात्रा

(ब) मंच प्रदर्शन।

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत निपुण प्रथम वर्ष

कंठ संगीत एवं वादन (सितार, वायलिन)

सैद्धान्तिक : (प्रथम प्रश्न–पत्र)

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(1) संगीत का इतिहास :

1. वैदिक सगीत का स्वरूप, वैदिक समाज (धर्म) में संगीत का स्थान।
2. जातिगान, जाति लक्षण एवं राग संगीत का प्रारम्भ।
3. ग्रामराग एवं देशी राग से सम्बन्धित जानकारी एवं प्रबन्ध के प्रकार।
4. शारंगदेव के बाद संगीत पर ईरानी, ईराकी एवं अरबी संगीत का प्रभाव।
5. उत्तर व दक्षिण भारतीय संगीत के अन्तर का प्रादुर्भाव एवं कारण।
6. व्यंकटमखी के 72 मेल। श्री निवास द्वारा वीणा के तार पर स्वरों की स्थापना।
7. ध्रुपद का इतिहास, प्रबन्ध, गीतियाँ एवं वाणियाँ।
8. ख्याल का ऐतिहासिक विकास।
9. ठुमरी का विकास।
10. कव्वाली एवं लोकगीत। उनका संगीत पर प्रभाव।
11. तत् एवं वितत वाद्यों से सम्बन्धित घरानों का इतिहास एवं उनका वर्गीकरण।
12. प्राचीन भारतीय वाद्य यंत्र एवं उनका विकास।

सैद्धान्तिक :–(द्वितीय प्रश्न–पत्र)

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

2. संगीत शास्त्र के सिद्धान्त :

(1) प्राचीन श्रुति स्वर व्यवस्था। भरत की प्रमाण श्रुति, सारणा चतुष्टयी, प्राचीन, मध्य युगीन, अर्वाचीन सप्तकों का एवं पाश्चात्य सप्तकों का तुलनात्मक अध्ययन।

(2) प्रबन्ध रचना के तत्व, प्रबन्ध के अंग, वाग्गेयकार और उनके प्रकार।

(3) गायकों एवं वादकों के गुण–दोष।

(4) स्वर प्रधान एवं शब्द प्रधान संगीत।

(5) गायन एवं वादन की बढ़त प्रक्रिया एवं नायकी।

(6) राग वर्गीकरण के सिद्धान्त प्राचीन राग–रागिनी व्यवस्था, आधुनिक राग वर्गीकरण, राग समय सिद्धान्त, थाट व्यवस्था, रागांग वर्गीकरण।

(7) पाश्चात्य नोटेशन पद्धतियों का संक्षिप्त अध्ययन।

(8) वृन्दवादन, वृन्दगान, पार्श्व संगीत नियोजन, पार्श्व संगीत का महत्व और प्रयुक्तियाँ।

(9) लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत का परस्पर सम्बन्ध, राजस्थानी लोक संगीत की विशेषताएँ।

(10) उत्तर तथा दक्षिण भारतीय संगीत के प्रमुख वाद्य यन्त्रों की तुलना।

(11) पाश्चात्य वाद्य यंत्रों का भारतीय संगीत पर प्रभाव तथा समावेश।

प्रायोगिक परीक्षा का पाठ्यक्रम :

(निपुण प्रथम एवं द्वितीय वर्ष)

(1) क्रियात्मक परीक्षा के लिए संगीत निपुण प्रथम व द्वितीय खण्ड के रागों की सूची निम्न प्रकार है। प्रत्येक खण्ड के लिए रागों का एक आवश्यक ग्रुप है, जिसमें सभी राग सम्पूर्ण गायकी (बड़ा–छोटा ख्याल) के साथ गाना आवश्यक है। आवश्यक ग्रुप के अलावा प्रत्येक खण्ड के लिए आठ वैकल्पिक ग्रुप रखे गये हैं। इन आठ ग्रुप में से कोई 6 ग्रुप विद्यार्थी चुन सकते हैं। जिसमें प्रत्येक ग्रुप में से दो राग तैयार करना आवश्यक है। इस प्रकार वैकल्पिक 6 ग्रुपों में से 12 रागों की तैयारी तथा आवश्यक ग्रुप के 8 रागों की तैयारी सम्पूर्ण करनी है। वैकल्पिक ग्रुप के बाकी 8 रागों में केवल छोटा ख्याल अथवा तराना आना चाहिए और उन रागों में आलाप तान आदि ठीक प्रकार से आना चाहिए।

(2) प्रत्येक खण्ड के पाठ्यक्रम के रागों में एक एक धुप्रद, एक धमार, दुगुन, तिगुन, चौगुन, सहित आना आवश्यक है एवं इस गायकी में लयकारी का प्रदर्शन अपेक्षित रहेगा।

(3) प्रत्येक खण्ड में विद्यार्थी को एक ठुमरी व एक टप्पा गाना आवश्यक है।

(4) वाद्य के विद्यार्थी के लिए उपर्युक्त व्यस्था ही रहेगी। जहाँ गायन में बड़ा ख्याल व छोटा ख्याल अपेक्षित है वहाँ वाद्य में मसीतखानी व रजाखानी गतें अपेक्षित हैं। जहा। गायन में विद्यार्थी से गायकी अपेक्षित है, वहीं वाद्य वादन शैली अपेक्षित है। ठुमरी के लिए वाद्य विद्यार्थी कोई दो गतें अथवा ललित धुनें प्रस्तुत करेंगे। वाद्य के विद्यार्थियों को तीन ताल के अलावा अन्य किन्हीं भी दो तालों में प्रत्येक की एक–एक गतें आनी चहिए।

(5) इस परीक्षा में विभिन्न कलाकारों के रिकार्ड बजाकर उनका प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण, ज्ञान, जाँचा जायेगा, यह परीक्षा एक घण्टे की होगी।

प्रायोगिक परीक्षा के लिए रागों की ग्रुपवार सूची
संगीत निपुण (प्रथम वर्ष)

(अ) मुख्य प्रायोगिक

पूर्णांक : 400 न्यूनतम : 144

(1) (1) आवश्यक ग्रुप–

1. यमन, 2. मालकौंस 3. श्री, 4. तोड़ी, 5. भीमपलासी,
6. भैरव, 7. अल्हैया बिलावल, 8. मियाँमल्हार

उपर्युक्त सभी रागों में बड़ा ख्याल व छोटा ख्याल सम्पूर्ण गायकी सहित।

(।।) वैकल्पिक ग्रुप–

ग्रुप संख्या 1. श्याम कल्याण, पूरिया कल्याण, हंसध्वनि।

ग्रुप संख्या 2. चन्द्रकौंस, जोगकौंस, जोग, तिलंग।

ग्रुप संख्या 3. जैतश्री, त्रिवेणी, गौरी, ललितागौरी।

ग्रुप संख्या 4. विलासखानी तोड़ी, भूपालतोड़ी, गुर्जर तोड़ी, सालगवराली।

ग्रुप संख्या 5. अहीर भैरव, वैरागी भैरव, नट भैरव, जोगिया, विभास।

ग्रुप संख्या 6. हंस किंकणी, पटदीप, मधुवन्ती, कीरवाणी।

ग्रुप संख्या 7. देवगिरी बिलावल, यमनी बिलावल, शुक्ल बिलावल, गुणकली (बिलावल अंग)

ग्रुप संख्या 8. रामदासी मल्हार, गौड़ मल्हार, सूरमल्हार, मेघ मल्हार।

उक्त वैकल्पिक ग्रुपों में से कोई 6 ग्रुप चनें जिनमें प्रत्येक ग्रुप में से दो राग चुनें इस प्रकार कुल 12 रागों में से किन्हीं चार रागों में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, तराना आदि आलाप सहित आना आवश्यक है।

(ब) मंच प्रदर्शन

पूर्णांक : 150 न्यूनतम : 54

संगीत निपुण (द्वितीय वर्ष)

कंठ संगीत एवं वादन (सितार, वॉयलिन)

संगीत का तत्वदर्शन एवं विज्ञान :

सैद्धान्तिक

(प्रथम प्रश्न–पत्र)

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(1) नाद–परिभाषा, उत्पत्ति एवं विशेषताएँ।

(2) ध्वनि निर्माणकारी मानवीय अंग एवं उनका ध्वनि निर्माण, श्वांस–नियन्त्रण, अव्यंग रूप में गायन की क्रिया, ध्वनि श्रवण इन्द्रियां और श्रवण प्रक्रिया।

(3) संगीत का अन्य ललित कलाओं में स्थान एवं परस्पर संबंध

(4) संगीत एवं धर्म।

(5) संगीत शिक्षण एवं उसकी ग्रहण क्षमता, संगीत प्रभावित मनोव्यापार, संगीत में नवीन कल्पना सृजन (न्यू ट्रेन्ड्स) एवं उसके विविध प्रयोग।

(6) कला व सौन्दर्य की व्याख्या। सौन्दर्य की कल्पना का संगीत में प्रयुक्तीकरण।

(7) संगीत के समीक्षातत्व एवं संगीत समालोचना।

(8) ध्वनि नियोजन (एकौस्टिक्स) के सामान्य नियम और संगीत के प्रस्तुतीकरण में उनका प्रयोग।

(9) ध्वनि मुद्रण की तकनीक एवं महत्व। आधुनिक संगीत में उसकी उपादेयता।

(10) आधुनिक जन माध्यम (मास मीडिया) के साधन (रेडियो, टेलीविजन, फिल्में, टेप रिकार्डर आदि) एवं उनका संगीत पर प्रभाव।

सैद्धान्तिक

(द्वितीय प्रश्न–पत्र)

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

एक निबन्ध कम से कम एक हजार शब्दों का जिसके विषय निपुण के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय प्रश्न पत्रों में से लिए जायेंगे।

राजस्थान संगीत संस्थान

प्रायोगिक परीक्षा के लिए रागों की ग्रुपवार सूची

संगीत निपुण (द्वितीय वर्ष)

(अ) मुख्य प्रायोगिक

पूर्णांक : 400 न्यूनतम : 144

(1) (1) आवश्यक ग्रुप–

1. दरबारी कानड़ा 2. ललित 3. पूरिया 4. बिहाग
5. मारवा 6. केदार 7. वृन्दावनी सारंग 8. जौनपुरी

(।।) वैकल्पिक ग्रुप–

ग्रुप संख्या 1. नायकी कान्हड़ा, कौसी कान्हड़ा, आभोगी कान्हड़ा, शहाना कान्हड़ा।

ग्रुप संख्या 2. रागे श्री, मालगुन्जी, झिंझोटी, गारा।

ग्रुप संख्या 3. बिहागड़ा, मारू बिहाग, नन्द, सावनी, नट बिहाग।

ग्रुप संख्या 4. सोहनी, भटियार, बसन्त बहार, भैरव–बहार।

ग्रुप संख्या 5. बसन्त मुखारी, गोपी–बसन्त, चारूकेशी, भैरवी।

ग्रुप संख्या 6. शुद्ध सारंग, मध्यमाह सारंग, मियाँ की सारंग, सामन्त सारंग।

ग्रुप संख्या 7. देशी, कोमलऋषभ आसावरी, देव–गंधार, गांधारी।

ग्रुप संख्या 8. खम्भावती, नारायणी, गोरख कल्याण, कलावती।

उक्त वैकल्पिक ग्रुपों में से कोई 6 ग्रुप लें जिनमें प्रत्येक ग्रुप में से दो राग चुनें इस प्रकार कुल 12 रागों में से किन्हीं चार रागों में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल सम्पूर्ण गायकी सहित तैयार करना व शेष 8 रागों में से ख्याल, तराना आदि आलाप व तान सहित आना आवश्यक है।

(ब) मंच प्रदर्शन

पूर्णांक : 150 न्यूनतम : 54

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत मध्यमा प्रथम वर्ष

तबला

अंक विभाजन : 200

(प्रायोगिक 140+ सैद्धान्तिक 60)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 60 न्यूनतम : 22

(1) तबला एवं मृदंग की रचना के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी।

(2) सम, मात्रा, ठेका, कायदा, खाली, भरी, विभाग, तिहाई, नाद, लय रेला आवृति (आवर्तन) शब्दों का पारिभाषिक ज्ञान।

(3) तबले के मुख्य वर्ण, उन्हें निकालना।

(4) त्रिताल, झपताल, एकताल, दादरा, कहरवा को लिपिबद्ध करना।

(5) अपने वाद्य का सचित्र वर्णन ।

प्रायोगिक

पूर्णांक : 140 न्यूनतम : 50

(1) निम्न तालों का ज्ञान : झपताल, त्रिताल, दादरा, कहरवा, एकताल, हाथ से ताली देकर ठाह दुगुन करना।

(2) त्रिताल, झपताल में दो कायदे 5–5 पल्टों सहित बजाना।

(3) कहरवा दादरा तालों को विभिन्न प्रकार से बजाना (सुगम संगीत के साथ)

(4) पाठ्यक्रम के तालों को तबले पर सुनकर पहचानना।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत मध्यमा द्वितीय वर्ष

तबला

अंक विभाजन : 200

(प्रायोगिक 140+सैद्धान्तिक 60)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 60 न्यूनतम : 22

(1) विलम्बित, मध्य, द्रुत लय का ज्ञान

(2) तबले के विभिन्न वर्ण और उन्हें अपने वाद्य पर निकालने की विधि।

(3) प्रथम वर्ष के तालों के अतिरिक्त क्रियात्मक पक्ष के तालों को बराबर दुगुन तथा चौगुन में लिपिबद्ध करना।

(4) मुखड़े, टुकड़े इत्यादि को विभिन्न तालों में लिपिबद्ध करना।

(5) निम्न पारिभाषिक शब्दों की जानकारी–गत, परन, कायदा, रेला, मुखड़ा, तिहाई

क्रियात्मक :

पूर्णांक : 140 न्यूनतम : 50

(1) अपने वाद्य सम्बन्धी सभी शब्दों को स्पष्ट रूप से निकालने की क्षमता।

(2) निम्न तालों को ठाह, दुगुन में बजाने का अभ्यासः तिलवाड़ा, रुपक, चौताल, तीव्रा, त्रिताल, एकताल।

(3) त्रिपाल, झपताल के दो–दो कायदे, 4–4 प्रकार सहित, दो टुकड़े, दो तिहाईयाँ।

(4) कहरवा दादरा में लग्गियों को बजाना।

(5) पिछले पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत मध्यमा तृतीय वर्ष

तबला

अंक विभाजन : 200

(प्रायोगिक 200 + सैद्धान्तिक 100)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(1) तबले का इतिहास।

(2) तबले के घरानों के बारे में संक्षिप्त में जानकारी।

(3) तबले के बाज व घराने में अन्तर।

(4) गायन–वादन के साथ संगत करना।

(5) जीवनियाँ

(क) पंडित सामता प्रसाद (गुदई महाराज)

(ख) थिरकवा खां

(ग) अल्लारखा खां

(घ) कुदऊसिंह जी

(6) तबला सम्बन्धी विषयों पर निबन्ध

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 200 न्यूनतम : 72

(1) निम्न तालों के ठेके बजाना : झूमरा, आड़ा चौताल, पंजाबी, धमार।

(2) उपरोक्त तालों में तिहाई बजाना।

(3) तबले के स्वर से मिलाना।

(4) त्रिताल, झपताल, एकताल में दो कायदे, एक पेशकार, 2–2 गते परणें, 2–2 मोहरे। 20 मिनट तक स्वतंत्र वादन (सोलोवादन)

(5) तिरकिट के बोलों की तैयारी।

(6) कहरवा में सुन्दर लग्गियाँ बजाना।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत विशारद प्रथम वर्ष

तबला

अंक विभाजन : 400

(प्रायोगिक 250 + सैद्धान्तिक 100+मंच 50)

संगीत शास्त्र :

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(अ) पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान :

1. तत्, वितत्, घन, सुषिर, ग्रह, जाति लड़ी, पेशकार, गत परण, तिहाई, लग्गी, चक्करदार परण, उठान, फरमायशीपरण, नौहक्का, बोल तथा बिआड़।
2. तबला वादक के गुण–दोष।
3. पिछले अभ्यास क्रम के सभी तालों के कायदे, टुकड़े, मुखड़े आदि को ताल लिपि में लिखने का अभ्यास।
4. ताल वाद्य का स्वर वाद्यों के साथ सम्बन्ध व उनका प्रयोग।
5. मृदंग के अंगों तथा वर्णों का ज्ञान।

(ब) मुख्य प्रायोगिक :

पूर्णांक : 250 न्यूनतम : 90

1. अभ्यास क्रम में आई हुई सभी तालों को दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़ी लय में भली प्रकार से बजाने का अभ्यास।
2. निम्नलिखित तालों को बजाने का अभ्यास : झूमरा, पंजाबी, सूलताल, आड़ाचौताल, अद्धा, खेमटा, धमार।
3. रूपक, दादरा, कहरवा में लग्गी बजाना तथा तिहाई लेकर सम पकड़ने का अभ्यास।
4. त्रिताल, झपताल, एकताल में चार कायदे पाँच–पाँच प्रकारों सहित सूलताल व चौताल में चार–चार परणें, त्रिताल में आड़ीलय के टुकड़े।
5. गायन व वादन शैलियों के साथ संगत करने का अभ्यास।
6. लिखे हुए बोलों को पढ़कर अपने वाद्य पर बजाने का अभ्यास।
7. कम से कम 20 मिनट तक स्वतंत्र वादन, निम्न तालों में बजाने का अभ्यास : त्रिताल, झपताल या एकताल
8. अपने वाद्य यन्त्रों को सही प्रकार से मिलाने का अभ्यास

(स) मंच प्रदर्शन

पूर्णांक : 50 न्यूनतम : 18

इस प्रश्न पत्र में विद्यार्थियों को श्रोताओं के सम्मुख सभी तालों में तबला वादन का कार्यक्रम प्रस्तुत करना होगा।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत विशारद द्वितीय वर्ष

तबला

अंक विभाजन : 400

(प्रायोगिक 250 + सैद्धान्तिक 100+मंच 50)

संगीत शास्त्र :

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

1. तबला, वाद्य का इतिहास तथा उनके बाज सम्बन्धी परम्परागत जानकारी।
2. निम्नलिखित शब्दों का विस्तृत ज्ञान : गति, यति, संवादी, संगत, लोम, विलोम तथा ताल के दस प्राण।
3. विभिन्न लय को लिपि बद्ध करने का अभ्यास तथा विभिन्न लय में तिहाई तथा मुखडे बनाना।
4. उत्तर भारतीय तथा कनार्टक ताल पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन।
5. निम्नलिखित तबला वादकों का जीवन परिचय एवं उनकी वादन शैलियों की जानकारी – कुदऊसिंह (पखावजी), अनोखेलाल, अहमद जान शिरकवा, कण्ठेमहाराज।
6. अपने पाठ्यक्रम के सभी तालों को ताल लिपि में लिखने का अभ्यास।
7. तबले के घरानों का तुलनात्मक अध्ययन।

(अ) मुख्य प्रायोगिक :

पूर्णांक : 250 न्यूनतम : 90

1. अब तक सीखी हुई समस्त तालों को हाथ से ताल लगाकर तोड़े टुकड़े, परनों के पढ़न्त का अभ्यास।
2. त्रिताल, झपताल, दीपचन्दी, एकताल में कुछ नये तोड़े, परने, चक्करदार परने, आड़लय का काम तथा सफाई के साथ बजाने की क्षमता चौताल तथा धमार में 4–4 बड़ी परनें तथा 4–4 रेले। आड़ा चार ताल, रूपक ताल में 2–2 तिहाईयाँ तथा दादरा कहरवा में लग्गी व लड़ियों का कार्य
3. नृत्य सम्बन्धी बोलों का साधारण ज्ञान व उन्हें अपने वाद्य पर बजाने का अभ्यास।
4. गायक, वादन तथा नर्तक की संगत करने का अभ्यास
5. नये ताल– पंचम सवारी, गजझंपा, मत्ततताल को अपने वाद्य पर बजाना।

(ब) मंच प्रदर्शन

पूर्णांक : 50 न्यूनतम : 18

इस प्रश्न पत्र में विद्यार्थियों को श्रोताओं के सम्मुख सभा में तबला का कार्यक्रम प्रस्तुत करना होगा।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत विशारद तृतीय वर्ष

तबला

अंक विभाजन : 400 (प्रायोगिक 300 + सैद्धान्तिक 100+मंच 100)
सैद्धान्ति : 200 (100 प्रथम प्रश्न पत्र + 100 द्वितीय प्रश्न पत्र)
शास्त्र :–प्रथम प्रश्न–पत्र
पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36 1

1. पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान–कमाली, परन, नौहक्का, बाज, घराने, त्रिपल्ली, दुपल्ली, दम, बेदम, अतीत, अनाघात, विषम।
2. ठेका, गत और परनों का गठन तथा उनका स्वतंत्रत वादन (संगत के साथ एवं पृथक)
3. एक ही टुकड़े अथवा परन को विभिन्न तालों में लिपिबद्ध करने का ज्ञान।
4. तिहाइयाँ, टुकड़े व रेलों में नये प्रकार बनाने का ज्ञान।
5. शास्त्रीय संगीत एवं सुगम संगीत में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख ताल–वाद्य व उनकी शैली की संक्षिप्त जानकारी।

द्वितीय प्रश्न–पत्र पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36 1

1. ताल वाद्य यन्त्रों को बजाने की प्रक्रिया व उनके काम आने वाले तत्वों एवं वस्तुओं की जानकारी।
2. समान मात्रा वाले तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. निबन्ध के विषय : (अ.) तबला के अभ्यास करने की विधि।

(ब.) सोलो वादन की उन्नति कैसे हो ? (स.) शिक्षण संस्थाओं में तबले का स्थान।

4. ताल एवं घन वाद्य का सम्बन्ध।
5. प्रसिद्ध तबला वादकों की जीवनियाँ : कण्ठेमहाराज, अहमद जान थिरकवा, सामता प्रसाद, अल्लारक्खा खां।

(अ) मुख्य प्रयोगिक : पूर्णांक : 300 न्यूनतम : 108

1. अभ्यास क्रम में आए हुए प्रत्येक ताल को समुचित ढंग से बजाना तथा पेशकारों का सुन्दर प्रयोग।
2. विभिन्न लयकारियों का अभ्यास–एक मात्रा में दो, दो में से एक, दो में तीन, तीन में दो, चार में तीन, तीन में चार, चार में पाँच, पाँच में चार तथा एक में तीन, तीन में एक करके बजाने की क्षमता।
3. गायन, वादन तथा नृत्य संगत का अभ्यास।
4. स्वतन्त्र वादन का अभ्यास। 30 मिनट तक तालों का स्वतंत्रत वादन त्रिताल, आड़ा चार ताल, एकताल, झपताल,। 10 मिनट तक निम्न तालों का स्वतंत्र वादन–धमार, चौताल, सूलताल।
5. नये ताल–पश्तो, बसंत, फरोदस्त, ब्रह्मताल, लक्ष्मीताल, अष्टमंगल, कुम्भताल को बजाने का अभ्यास।
6. किसी स्वर वाद्य पर प्रथम वर्ष के ताल संगत हेतु नगमा बजाने का अभ्यास।

(ब) मंच प्रदर्शन : पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

इस प्रश्न पत्र में विद्यार्थियों को श्रोताओं के सम्मुख सभा में तबला वादन का कार्यक्रम प्रस्तुत करना होगा।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत निपुण प्रथम वर्ष

तबला

अंक विभाजन : 800 (प्रायोगिक 400 – 144 + मंच प्रदर्शन 150)

सैद्धान्तिक : 250 (प्रथम प्रश्न पत्र 125 + द्वितीय प्रश्न पत्र 125)

प्रथम प्रश्न–पत्र

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(1) भारतीय संगीत के प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास की जानकारी।

(2) भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण एवं अवनद्य वाद्यों की ऐतिहासिक जानकारी।

(3) शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत तथा वृन्द वादन में प्रयुक्त होने वाले अवनद्य एवं घन वाद्यों की जानकारी एवं उन पर व्यवहार में आने वाली तालों का ज्ञान।

(4) ताल रचना के सिद्धान्तों का विस्तृत ज्ञान।

(5) पाश्चात्य ताल लिपि पद्धति का ज्ञान एवं उसके मुख्य अवनद्य वाद्यों (कैटेल ड्रम, ट्रेनर ड्रम, स्नेअर ड्रम, बास ड्रम व साइड ड्रम) आदि का साधारण ज्ञान।

(6) लय एव लयकारी का विस्तृत अध्ययन एवं लयकारियों एवं जातियों का पारस्परिक सम्बन्ध।

(7) पाश्चात्य एवं उत्तर भारतीय तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

(8) तबला/पखावज के प्रसिद्ध कलाकारों की जीवनी एवं उनका योगदान।

(9) संगीत विषयक निबंध लिखने की क्षमता।

द्वितीय प्रश्न–पत्र

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(1) उत्तर भारतीय एवं कर्नाटक संगीत के अवनद्ध एवं घन वाद्यों का सामान्य ज्ञान।

(2) कठिन व अप्रचलित तालों की उपयोगिता पर सम्यक् विचार।

(3) भातखण्डे ताल पद्धति एवं विष्णु दिगम्बर ताल पद्धति का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।

(4) दिये गये बोलों के आधार पर टुकड़ा, परन व तिहाईयों की रचना करना।

(5) विभिन्न लयकारियों को लिखने का ज्ञान।

(6) पाठ्यक्रम की तालों में फरमाइशी कमाली व साधारण चक्करदार एवं नौहक्का की रचनाओं को बनाने का सूत्र।

(7) तबला/पखावज के घरानों की उत्पत्ति का तर्क संगत इतिहास।

(8) पिंगल शास्त्र का ज्ञान ताल व छन्द का सम्बन्ध।

क्रियात्मक (प्रयोगात्मक परीक्षा

पूर्णांक : 400 न्यूनतम : 144

(1) प्रश्नावली।

(2) तबले व पखावज के परीक्षार्थी को अपने वाद्य के अतिरिक्त दूसरे वाद्यों के सम्बन्ध में सामान्य ज्ञान।

(3) बोल अथवा बोल समूह को विभिन्न घरानों की वादन शैली में (इनके बजाने की शैली की) प्रदर्शन करने की क्षमता।

(4) विभिन्न गायन शैलियों के साथ व तंत्र वादन के साथ संगति करने की क्षमता।

(5) पाठ्यक्रम की निर्धारित तालें : तीन ताल, झपताल, एक ताल में स्वतंत्र वादन की सम्पूर्ण सामग्री का ज्ञान व बजाने की क्षमता।

(6) पाठ्यक्रम की (पखावज के लिए) धमार, लक्ष्मी व गणेश ताल में स्वतंत्र वादन की क्षमता।

(7) तबला/पखावज की विभिन्न रचनाओं को हाथ पर ताल देकर पढन्त करने की क्षमता।

(8) 9 मात्रा एवं 15 मात्रा की तालों में 15 मिनट का स्वतंत्र वादन प्रस्तुत करने की क्षमता।

मंच प्रदर्शन :

पूर्णांक : 150 न्यूनतम : 54

पाठ्यक्रम से किसी एक ताल में 30 मिनट का स्वतंत्र वादन प्रस्तुत करने की क्षमता।

नोट : (परीक्षक मंच प्रदर्शन के निर्धारित समय से पूर्व भी परीक्षा को रोक सकता है)

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत निपुण द्वितीय वर्ष

तबला

अंक विभाजन : 800 (प्रायोगिक 400 + मंच प्रदर्शन 150)

सैद्धान्तिक : 250 (प्रथम प्रश्न पत्र 125 + द्वितीय प्रश्न पत्र 125)

सैद्धान्तिक :

प्रथम प्रश्न–पत्र

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(1) प्रथम से सप्तम वर्ष तक सभी पारिभाषिक शब्दावली की व्याख्या तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन।

(2) भारतीय संगीत में ताल की अवधारणा और अवनध वाद्यों के विकास का इतिहास।

(3) स्वर एवं ताल के पारस्परिक सम्बन्ध एवं रसानुभूति प्रक्रिया में ताल एवं लय की उपयोगिता।

(4) नाद की जाति, गुण एवं सहायक नादों का उनसे सम्बन्ध (तबला/पखावज में उत्पन्न होने वाले सहायक नाद तथा स्व संवादों का ज्ञान)

(5) तबला/पखावज के रचना, आकार, प्रकार तथा उनके निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री, स्याही का वैज्ञानिक अध्ययन । अच्छे उत्कृष्ट तबला/पखावज के चयन का आधार।

(6) पिंगल शास्त्र (अष्ट पिंगल) का विस्तृत अध्ययन ओर लघु–गुरु का महत्व।

(7) ताल के दस प्राणों के विस्तृत जानकारी और वर्तमान ताल पद्धति से उसका सामंजस्य।

(8) तबला/पखावज के मूर्धन्य कलाकारों का जीवनवृत्त।

(9) पखावज की अपेक्षा वर्तमान समय में तबले की उपयोगिता एवं महत्व अधिक होने के कारण और उसका ऐतिहासिक अध्ययन।

(10) किसी संगीत विषय पर निबंध लिखने की क्षमता।

प्रायोगिक :

द्वितीय प्रश्न–पत्र

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(1) पाठ्यक्रम की किसी ताल को अन्य ताल में लिपिबद्ध करना।

(2) विभिन्न प्रकार की तिहाईयों की रचना करना एवं अन्य रचनाओं (टुकड़ा, परन, गत) को तालिपि में लिखना।

(3) स्वतंत्र वादन एवं संगति के विभिन्न सिद्धांतों की विस्तृत चर्चा।

(4) पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों के ठेकों को कठिन लयकारियों में लिखने की क्षमता।

(5) तबला/पखावज की वादन शैलियों व घरानों के विकास का तुलनात्मक अध्ययन।

(6) छन्द, ताल एवं उनके द्वारा भावाभिव्यक्ति का गूढ़ अध्ययन।

(7) उत्कृष्ट तबला / पखावज वादकों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

(8) घरानों की परम्परा का वर्तमान समय में महत्व एवं उपयोगिता।

(9) प्राचीन, मध्य व आधुनिक ताल पद्धति के सिद्धान्त एवं स्वरूप का अध्ययन।

क्रियात्मक (प्रयोगात्मक परीक्षा)

पूर्णांकः 400 न्यूनतम : 144

(1) पूर्व पाठ्यक्रम की निर्धारित तालों में उच्च स्तरीय स्वतन्त्र वादन की क्षमता एवं ब्रह्म ताल अष्टमंगल अर्जुन तथा परतो व खेमटा में स्वतः वादन करने की क्षमता।

(2) निम्नलिखित छन्दों का क्रियात्मक अध्ययन भुजगप्रयात, झूलना, अश्वगति, धनाक्षरी, रूप धनाक्षरी, देव धनाक्षरी, तोटक, सोलनी, मालिन एवं मडांवा छन्दों का साधारण ज्ञान। (3) निम्नलिखित तालों में से किन्हीं तालों में 15–15 मिलट का स्वतंत्र वादनः (क) 9 मात्रा की ताल (ख) 13 मात्रा की कोई ताल (ग) 17 मात्रा की कोई ताल।

(4) निम्नलिखित में रचना करने की क्षमता टुकड़े परन, पेशकार, मुखड़े, मोहरें, तिहाइयां।

(5) स्वतंत्र वादन व संगति में प्रयुक्त ताल के ठेका की किस्में तथा व्यवहार में आने वाली अन्य रचनाओं का विस्तृत ज्ञान।

(6) कठिन लयकारियों की पढ़न्त जैसे 3/2, 4/3, 3/4, 5/4, और 7/7

मंच प्रदर्शन :

पूर्णांक : 150 न्यूनतम : 54

आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष पाठ्यक्रम की किसी ताल में स्वतंत्र वादन की प्रस्तुति।

नोट : परीक्षक निर्धारित समय से पूर्व रोक सकता है।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत मध्यमा प्रथम वर्ष

कथक नृत्य

अंक विभाजन : 200 (प्रायोगिक 140 + सैद्धान्तिक 60)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 60 न्यूनतम : 22

(1) संगीत शब्द की परिभाषा तथा उसमें नृत्य का स्थान।

(2) नृत्य कला सीखने से लाभ।

(3) शास्त्रीय एवं लोक नृत्य में अन्तर।

(4) कथक नृत्य के विषय में सामान्य जानकारी तथा पाँच वर्तमान कत्थक कलाकारों के नाम।

(5) अभिनय दर्पण के अनुसार 6 अंग, 6 प्रत्यंग तथा 12 उपांगों का ज्ञान।

(6) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान : लय, विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय, सम, ताली, खाली, मात्रा, विभाग, आवर्तन, तत्कार, ठेका, हस्तक, आमद, ठाठ, सलामी, ठाह, तिहाई, दुगुन, चौगुन आदि।

(7) कत्थक नृत्य में घुँघरू का महत्व। स्वर, वजन, आकार तथा बाँधने की विधि।

(8) निम्नलिखित तालों को लिपिबद्ध करना तथा ठाह, दुगुन में लिखनाः त्रिताल, कहरवा, दादरा।

(9) सीखे हुए बोलों को लिपिबद्ध करना।

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 140 न्यूनतम : 50

(1) त्रिताल की तत्कार, ठाह, दुगुन व चौगुन लयों में।

(2) त्रिताल में तत्कार के चार पल्टे।

(3) बोलों के प्रदर्शन में पाँच तथा तीन पदाघातों के चक्कर।

(4) नृत्य करते समय ग्रीवा तथा कलाई का लयबद्ध संचालन।

(5) त्रिताल में 10 आरम्भिक तोड़े।

(6) कहरवा व दादरा में पद संचालन।

(7) सीखे हुए बोलों को ताल लगाकर पढ़न्त करना।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत मध्यमा द्वितीय वर्ष

कथक नृत्य

अंक विभाजन : 200 (प्रायोगिक 140 + सैद्धान्तिक 60)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 60 न्यूनतम : 22

(1) नाटय शास्त्रानुसार नाट्योत्पति की कथा।

(2) नर्तन भेदः नृत्त, नाट्य एवं नृत्य की परिभाषा उदाहरण सहित।

(3) अभिनय दर्पण के अनुसार नौ प्रकार के सर संचालन का लक्षण–विनियोग।

(4) अभिनव दर्पण के अनुसार निम्नलिखित असंयुक्त हस्त मुद्राओं के लक्षण विनियोग–पताका, त्रिपताका, अर्धपताका, कर्तरीमुखरी, मयूर, अराल, शुक्रतुण्ड, अर्धचन्द्र, मुष्टि, शिखर, कपित्थ, कटकामुख, सूची, चन्द्रकला।

(5) कथक नृत्य के जयपुर, लखनऊ एवं बनारस घरानों का संक्षिप्त परिचय।

(6) श्री हनुमान प्रसाद (जयपुर), श्री बिन्दादीन (लखनऊ), पंडित जानकी प्रसाद (बनारस) का जीवन परिचय।

(7) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान : **ताल, गत निकास, गत भाव, गत–पल्टा, तोड़ा, टुकड़ा, परन, चक्करदार परन, प्रिमलू, कवित्त, पढंत, लहरा या नगमा।**

(8) तीन ताल, झपताल, एक ताल तथा रूपक के ठेके की ठाह, दुगुन, चौगुन में लिपिबद्ध करना।

(9) तीन ताल तथा झपताल में तिहाई, आमद, तोड़ा, चक्करदार तोड़ा, परन तथा कवित्त को लिपिबद्ध करना।

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 140 न्यूनतम : 50

(1) पिछले वर्ष सीखे हुए पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

(2) त्रिताल में : **ठाठ, आमद, प्रणाम या सलामी, 5 तोड़े, चक्करदार तोड़े, 2 परन, सादी गत, बांसुरी, मटकी का गत निकास, तत्कार अठगुन तक, तीन तिहाईयां।**

(3) झपताल में: **तत्कार की ठाह, दुगुन, चौगुन, ठाठ, आमद, पाँच सादा तोड़े दो चक्करदार तोड़े, दो परन, एक कवित्त, तीन तिहाईयां सम से सम तक।**

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत मध्यमा तृतीय वर्ष

कथक नृत्य

अंक विभाजन : 300 (प्रायोगिक 200 + सैद्धान्तिक 100)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(1) विभिन्न मतों से नृत्य की उत्पत्ति की कथा।
(2) तांडव एवं लास्य की परिभाषा तथा उसके प्रकार।
(3) अभिनय दर्पण के अनुसार चार प्रकार के ग्रीवा भेद तथा आठ प्रकार के दृष्टि भेदों का ज्ञान।
(4) निम्नलिखित असंयुक्त हस्त मुद्राओं की परिभाषा तथा विनियोग : पद्मकोष, सर्पशीष, मृगशीष, सिंहमुख, कांगुल, अलपद्म, चतुर, भ्रमर, हंसास्य, मुकुल, संदेश, ताम्रचूढ़, त्रिशूल।
(5) भारतखण्डे एवं विष्णु दिगम्बर ताल लिपि पद्धतियों का ज्ञान।
(6) कथक नृत्य का इतिहास।
(7) निम्नलिखित कलाकारों का जीवन परिचय तथा उनका योगदान : गुरु नारायण प्रसाद, पं. सुन्दर प्रसाद, पं. शम्भूमहाराज
(8) अंग संचालन के पांच प्रकार : अन्वित, कुन्वित, रेचित, आक्षिप्त, विक्षिप्त का ज्ञान।
(9) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान : मुद्रा, अदा, घुमरिया, स्तुति, अन्दाज, कसक–मसक, हाव–भाव, उठान, नटवरी, तत्कार पल्टा, कटाक्ष।
(10) निम्नलिखित तालों को ठाह, दुगुन तथा चौगुन में ताल लिपि में लिखना : चौताल, धमार, सूलताल, तीव्रा, आड़ा चारताल, दीपचन्दी।
(11) क्रियात्मक में दी गई तालों के बोलों को लिपिबद्ध करना।

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 200 न्यूनतम : 72

(1) गत वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
(2) त्रिताल में विशेष तैयारी तथा सभी बोल पिछले वर्षों से भिन्न हो–
1. बड़ा ठाठ 2. परन जुड़ी आमद 3. पांच सादे व दो चक्कर तोड़े 4. दो सादी व एक चक्करदार फरमाईशी परन 5. दो प्रिमलु व एक कवित्त 6. तत्कार के नवीन पल्टे 7. पांच दमदार व दो बेदम तिहाईयां 8. निकास की दो बड़ी गतें, मटकी, घूंघट एवं छेड़छाड़ की गत।
(3) झपताल में विशेष तैयारी।
(4) चौताल में – **1. तत्काल की ठाह 2. दुगुन, चौगुन तथा पल्टे 3. सलामी, आमद 4. दो प्रिमलू, एक कवित्त 5. पांच सादे व तीन चक्करदार तोड़े 6. तीन परनें (सादी), एक चक्करदार परन।**
(5) सभी बोलों को ताल देकर पढन्त करने का अभ्यास।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत विशारद प्रथम वर्ष

कथक–नृत्य

अंक विभाजन : 400 (प्रायोगिक 250 + मंच प्रदर्शन 50+ सैद्धान्तिक 100)

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(1) भारतीय शास्त्रीय शैलियाँ (कथक, भरतनाटयम, कथकली, मणिपुरी, ओडिसी, कुचीपुड़ी) का परिचय तथा तुलनात्मक अध्ययन।

(2) राजस्थान के प्रचलित लोक नृत्यों की सम्पूर्ण जानकारी।

(3) अभिनय तथा उसके चार प्रकारों का विस्तृत अध्ययन।

(4) जयपुर, लखनऊ व बनारस घरानों की कलात्मक विशेषताओं की तुलना।

(5) अभिनय दर्पण के अनुसार निम्नलिखित संयुक्त हस्तों के लक्षण तथा विनियोग– अन्जलि, कपोत, कर्कट, स्वास्तिक, पुष्पपुट, डोला, उत्संग, शिवलिंग, कटकावर्धन, शकट, कर्तरीस्वास्तिक, शंख तथा चक्र

(6) निम्नलिखित कलाकारों की जीवनी तथा उनका योगदान– पं. जयलाल, गुरू अच्छनमहाराज, गुरू लच्छू महाराज, महाराज कृष्ण कुमार।

7) उत्तर व दक्षिण भारतीय ताल पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।

(8) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान–आड, कुआड, बिआड, छन्द, स्थानक, घुमरिया, फरमाईशी, कमाली, पाद क्रिया, बेदम तिहाई, संयुक्त हस्त, असंयुक्त हस्त, चारी, सात्विक अभिनव, नृत्त–हस्त।

(9) निम्नलिखित कृष्ण लीलाओं का ज्ञान–माखनचोरी, गोवर्धन धारण, कालियादमन।

(10) निम्नलिखित तालों को ठाह, दुगुन, चौगुन में ताल लिपि सहित लिखना–सवारी (15 मात्रा), धुमाली (8मात्रा), अद्धा (16मात्रा), बसंत (9मात्रा)।

(11) क्रियात्मक में दी गई बन्दिशों को लिपिबद्ध करना।

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 250 न्यूनतम : 90

(1) गुरू वन्दना।

(2) त्रिताल, झपताल व चौताल में विशेष तैयारी (बोल पिछले वर्षों से भिन्न हो।)

(3) धमार ताल में ठाठ, आमद, तिहाई (सम से सम) तोड़, परन, चक्करदार बन्दिश।

(4) आड़ी लय का विशेष ज्ञान जो कि विभिन्न तालों में हो।

(5) त्रिताल में गत निकास की सीधे तथ उल्टे हाथ की गत, घूँघट, झूमर, मटकी, बाँसुरी, छपका आदि की गत प्रस्तुत करना। (भाव विशेष ध्यान)

(6) माखनचोरी व कालिया दमन के कथानक पर गतभाव।

(7) मीरा या सूरदास के पद पर भाव।

मंच प्रदर्शनः पूर्णांक : 50 न्यूनतम : 18

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत विशारद द्वितीय वर्ष

कथक–नृत्य

अंक विभाजन : 400 (प्रायोगिक 250 + मंच प्रदर्शन 50+ सैद्धान्तिक 50+50)

सैद्धान्तिक : अंक 50

पूर्णांक : 50 न्यूनतम : 18

(प्रथम प्रश्न–पत्र)

(1) भारत के निम्नलिखित नृत्यनाटयों की जानकारी : रासलीला, रामलीला, यक्षगान, नौटंकी।
(2) रासलीला और कथक नृत्य के परस्पर सम्बन्ध।
(3) सुकुमार अभिनय में नृत्य के प्रतीकों का महत्व।
(4) भाव–विभाव, अनुभाव, सात्विक भाव तथा संचारी भाव का ज्ञान।
(5) नवरस और नृत्य में उसका प्रयोजन।
(6) ताल के दस प्राणों का ज्ञान।
(7) दशावतारों की कथाओं का ज्ञान तथा उनकी हस्त मुद्राएं।
(8) निम्नलिखित हस्त मुद्राओं का लक्षण तथा विनियेग : सम्पुट, पाश, कीलक, गरूड़, मत्स्य, कुर्म, वराह नागबन्ध, खटवा, भैरूण्ड, वर्धमान ।

सौद्धान्तिक : अंक : 50

पूर्णांक : 50 न्यूनतम : 18

(द्वितीय प्रश्न–पत्र)

(1) कत्थक एवं नटवरी नृत्य।
(2) कत्थक नृत्य के घरानों का तुलनात्मक अध्ययन।
(3) शुद्ध अभिनय और चित्र अभिनय का भेद।
(4) नृत्य में लयकारी का स्थान।
(5) त्रिताल, झपताल एवं धमार को आड़, बिआड व कुआड में लिपिबद्ध करना।
(6) कथक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले गीत प्रकारों की परिभाषा लिखना :
अष्टपदी, ध्रुपद, ठुमरी, चतुरंग, त्रिवट, तराना, चैती, कजरी, होरी, दादरा।
(7) निम्नलिखित कलाकारों का जीवन–परिचय–
मैडम मेनका, श्रीमती सितारा देवी, सुश्री दमयन्ती जोशी, श्री बिरजू महाराज, श्री कुन्दनलाल गंगानी।

(8) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान– त्रिभंग, सुढंग, थर्र, धिलांग, लांग, डाट, अनुलोम, प्रतिलोम (लोम–विलोम)

(9) निम्नलिखित तालों का ज्ञान और उनके ठेके को विभिन्न लयकारियों में लिखने का अभ्यास– रूद्र (11 मात्रा), लक्ष्मी (18 मात्रा), ब्रह्मा (28 मात्रा), गजझम्पा (15 मात्रा), बड़ी सवारी (16 मात्रा)

(10) क्रियात्मक में प्रदर्शन की जाने वाली सभी तालों की बन्दशों को लिपिबद्ध करना त्रिताल, रूद्रताल, पंचम सवारी, चौताल, धमार आदि।

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 250 न्यूनतम : 90

(1) गत वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

(2) त्रिताल में कथक के समस्त अंगों को संयोजित कर सम्पूर्ण नृत्य प्रदर्शन की क्षमता का विकास।

(3) झपताल, चौताल, धमार की विशेष तैयारी का प्रदर्शन करना। उनमें तिस्त्र तथा मिस्त्र जाति पर आधारित बन्दिश भी प्रस्तुत करना।

(4) गोवर्धन लीला एवं होली पर गतभाव प्रस्तुत करना।

(5) किसी ठुमरी, भजन या गीत पर भावाभिनव।

(6) पंचम सवारी अथवा रूद्र में ठाठ, आमद, तोड़े, परन, कवित्त प्रस्तुत करना।

(7) तीन ताल में तत्कार की ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा अठगुन दिखाना।

(8) तीन ताल या किसी अन्य ताल में लड़ी या चलन का विस्तार प्रस्तुत करना।

(9) किन्हीं दो तालों के नगमे बजाने की क्षमता।

(10) सीखी हुई समस्त तालों के बोलों को ताल देकर पढ़न्त करना।

मंच प्रदर्शन :

पूर्णांक : 50 न्यूनतम : 18

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत विशारद तृतीय वर्ष

कथक नृत्य

अंक विभाजन : 400 (प्रायोगिक 300 + मंच प्रदर्शन 100)
सैद्धान्तिक : 200 (प्रथम प्रश्न–पत्र 100 + द्वितीय प्रश्न–पत्र 100)

सैद्धान्तिक :
पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(प्रथम प्रश्न–पत्र)

(1) नृत्य सम्बन्धी प्राचीन एवं मध्यकालीन ग्रन्थों की सामान्य जानकारी। (2) नाटयशास्त्र, संगीत रत्नाकर एवं अभिनय दर्पण का तुलनात्मक अध्ययन।
(3) नक्काली, आधुनिक नृत्य, नृत्य नाटिका के विषय में जानकारी।
(4) पाश्चात्य नृत्य कला सम्बन्धी जानकारी। भारतीय और पाश्चात्य नृत्यों की तुलना।
(5) अभिनय दर्पणानुसार देव हस्त, जाति हस्त तथा नवग्रह हस्तों का ज्ञान।
(6) चार प्रकार के नायक और अष्ट नायिका के लक्षण उदाहरण सहित।
(7) अभिनय दर्पण के अनुसार चारी, मण्डल, स्थानक और गति भेद।
(8) नृत्य प्रदर्शन के उपकरण रंगमंच, मंच सज्जा, दृश्य सज्जा, वेशभूषा, पार्श्व संगीत तथा ध्वनि प्रकाश।
(9) ताल शब्द की व्याख्या ताल की उत्पत्ति तथा जाति व यति भेदों को तोड़े या परन के रूप में लिपिबद्ध करना।

सौद्धान्तिक :
पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

(द्वितीय प्रश्न–पत्र)

(1) भारत में कत्थक नृत्य का क्षेत्र, प्रभाव तथा विस्तार।
(2) कथक नृत्य के विकास में नवाब वाजिद अली शाह एवं राजा चक्रधर सिंह का योगदान।
(3) कथक नृत्य के जयपुर घराने का तथा उसकी शाखा प्रशाखाओं का अध्ययन।
(4) कथक शैली में नृत्तांग की विशेषताओं का वर्णन ।
(5) वर्तमान युग में कथक नृत्य में होने वाले सृजनात्मक प्रयोगों की जानकारी।
(6) कथक नृत्य का पश्चिमी देशों में प्रभाव।
(7) निम्नलिखित कथक नृत्यकारों का जीवन परिचय– **सुश्री रोशन कुमारी, पं. दुर्गालाल, कुमुदिनी लाखिया, रोहिणी भाटे, पं. कार्तिक राम व पं. रामगोपाल।**
(8) निम्नलिखित तालों को विभिन्न लयों में लिखने का अभ्यास – अष्टमंगल (22 मात्रा), लक्ष्मी (18 मात्रा), मत्त (18 मात्रा), शिखर (17 मात्रा), रास (13 मात्रा)।
(9) तीनताल, धमार, रास ताल, बसन्त ताल आदि की आमद, तोडे, चक्करदार परन तथा तोडे फरमाईशी, कवित्त आदि को लिपिबद्ध करना।

राजस्थान संगीत संस्थान

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 300 न्यूनतम : 108

(1) सरस्वती वन्दना (या कुन्दे.....)

(2) पिछले वर्षों में आई हुई सभी तालों में विशेष तैयारी एवं पूर्व में भिन्न रचनाओं का नृत्य प्रदर्शन। (विशारद प्रथम वर्ष से तृतीय वर्ष के बीच)

(3) बसन्त तथा रास ताल में तत्कार, ठाठ, आमद, सलामी, तोडे, परन आदि की कम से कम दस बन्दिशे।

(4) गत निकास में तीन घूँघट के प्रकार, आँचल, गुलबईयाँ, अन्दाज, झूमर, छपका, कटार आदि का निकास।

(5) राजस्थानी माँड के गीत पर नृत्य करना। ठुमरी पर भाव प्रस्तुत करना।

(6) चीर हरण, शिव–पूजन, किन्हीं दो नायिका पर गत भाव।

(7) मिश्र जाति तथा त्रयस्त जाति की एक–एक बन्दिशें।

(8) परीक्षक द्वारा दी गई तिहाईयों को प्रस्तुत करना।

(9) परीक्षक द्वारा गई गई ठुमरी के बोलों पर भाव प्रस्तुत करना।

(10) पाठ्यक्रम में आये हुए समस्त बोलों ताल सहित पढ़न्त करने का अभ्यास।

मंच प्रदर्शन :

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 36

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत निपुण प्रथम वर्ष

कथक नृत्य

अंक विभाजन : 800

सैद्धान्तिक :
पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(प्रथम प्रश्न–पत्र)

(1) भारतीय नृत्य कला का इतिहास। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक।
(2) लोक नृत्यों का उद्‌भव एवं विकास, विशेषकर राजस्थान के लोक नृत्यों के संदर्भ में।
(3) नाटयशास्त्र के अनुसार प्रेक्षागृह (नाटयशाला) का स्वरूप तथा उनके भेद।
(4) रस सिद्धान्त का परिचय।
(5) नाटयशास्त्र में पूर्व रंग तथा उसका महत्व।
(6) नायक एवं अष्ट नायिकाओं का परिचय तथा उनके लक्षण।
(7) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान– करण, अंगहार, रेचक, स्थानक, चारी, मण्डल, सूत्रधार, नट, नटी।
(8) बैले, ओपेरा तथा बालरूम नृत्यों के विषय में सामान्य जानकारी।
(9) कथक नृत्य में भाव–प्रदर्शन की विशेषता तथा उसकी पारम्परिक समस्त विधियाँ– नयन–भाव, अंग– भाव, बोल–भाव, सभा–भाव, अर्थ–भाव, कर–भाव (केवल हस्तकों से) एवं गत–भाव का विस्तृत अध्ययन।
(10) चार प्रकार के वाद्यों का वर्गीकरण तथा उनके कुछ उदाहरण।

सौद्धान्तिक :
पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(द्वितीय प्रश्न–पत्र)

(1) नृत्य से सम्बन्धित निम्नलिखित में से किसी भी विषय पर निबन्ध।
  (स) नाटयशास्त्र के व्याख्याकार।
  (रे) ठुमरी शब्द का स्वरूप उत्पत्ति तथा विकास।
  (ग) भाव तथा रस की, कत्थक नृत्य की विशेषता।
  (म) लय–ताल तथा लयकारी की कत्थक नृत्य में विशेषता।
  (प) कत्थक नृत्य और रास में समानता या असमानता।
  (ध) कृष्ण चरित्र का समस्त शास्त्रीय शैलियों पर प्रभाव।
  (नि) कत्थक नृत्य में मुस्लिम प्रभाव।
  (स) कत्थक नृत्य में घूँघरू का महत्व।
(2) दिये गये निर्देशानुसार मुखड़े, बोल, परन आदि का रचना।
(3) इस वर्ष की तालों के साथ पूर्व की तालों में लयकारी।

प्रायोगिक :
पूर्णांक : 400 न्यूनतम : 144

(प्रथम प्रश्न–पत्र)

(1) विष्णु वन्दना।
(2) गणेश परन, शिव परन, कालिया दमन (कृष्ण ताण्डव) रास परन, सोलह श्रृंगार पर कवित्त रचनाएं प्रस्तुत करना।
(3) जयपुर शैली की विशेषताओं के अनुरूप त्रिताल, धमार, रास और बसंत ताल में सम्पूर्ण नृत्य प्रदर्शन।
(4) शिखर, ब्रह्म अथवा मत्त ताल में नृत्य करने की क्षमता।
(5) निम्नलिखित विशेष प्रकार की बन्दिशों का अभ्यास– फरमाईशी, कमाली, नवहक्का, दुपल्ली, तिपल्ली, चौपल्ली, जाति परन, ऋतु परन, पक्षी परन आदि।
(6) तत्कार में लय बांट, बोल जातियों पर आधारित तत्कार जरब की तत्कार, लड़ी आदि का प्रस्तुतीकरण तथा कुछ उपज का काम दिखाना।
(7) किसी भी ताल में भृकुटि संचालन करने की क्षमता।
(8) पिछले वर्ष के सभी गत–निकास की पुनरावृत्ति ।

प्रायोगिक :
पूर्णांक : 150 न्यूनतम : 54

(द्वितीय प्रश्न–पत्र)

(1) उन्नत प्रकार का ठाठ (जिसमें, गरदन, कलाई, वक्ष तथा भृकुटि का लयात्मक प्रयोग) गत–निकास में विशेषता।
(2) मोहिनी–भस्मासुर, द्रोपदी चीर हरण अथवा जटायु मोक्ष के कथानकों पर गत भाव प्रस्तुत करना।
(3) नवरस तथा अष्ट नायिकाओं को गत–भाव या ठुमरी की बन्दिश में प्रस्तुत करना।
(4) चतुरंग, तराना, त्रिवट, ऋतुगीत, गजल में से किसी एक पर नृत्य रचना।
(5) परीक्षक द्वारा निर्देशित ऋतुगीत, गजल में से किसी रचना पर भाव प्रस्तुत करना।

राजस्थान संगीत संस्थान

संगीत निपुण द्वितीय वर्ष

कथक–नृत्य

अंक विभाजन : 800

सैद्धान्तिक :

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(प्रथम प्रश्न–पत्र)

(1) कथक तथा उसके पर्यायवाची शब्द, उसकी व्युत्पत्ति, अर्थ तथा प्रयोग परम्परा। कथक नृत्य के उद्‌भव सम्बन्धी विभिन्न मान्यताएँ। कथक नृत्य के विकास का सम्पूर्ण इतिहास।

(2) कथक नृत्य में ठुमरी तथा कवित्त का महत्व।

(3) नायिका के शरीरज, अयत्नज तथा स्वाभाविक अलंकार। सोलह श्रृंगार बारह आभूषण।

(4) हल्लीसक नृत्य का परिचय तथा दण्ड रासंक से उसका अन्तर।

(5) कथक नृत्य के सप्त अवयव ठाठ या लक्षण, नृत्य, नृत्यांग, जाति, इष्टपद गतभाव तथा तराना।

(6) सौन्दर्य शास्त्र की संक्षिप्त जानकारी तथा कथक नृत्य का सौन्दर्य शास्त्रीय विवेचन।

(7) रस और भाव का पारस्परिक सम्बन्ध और अभिनय में उसका महत्व।

(8) बैले की उत्पत्ति एवं विकास। कथक शैली में बैले का परिचय तथा रचना के विभिन्न प्रयास।

(9) कथक नृत्य प्रदर्शन की प्राचीन एवं वर्तमान प्रदर्शन की पद्धति व वस्तुक्रम में अन्तर।

सौद्धान्तिक :

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 45

(द्वितीय प्रश्न–पत्र)

निबन्ध एवं संरचना

(1) नृत्य से सम्बन्धित किसी भी विषय पर निबन्ध।

(2) नृत्य में पिंडियों के भेद तथा आधुनिक नृत्य रचना से उनकी तुलना।

(3) एकल नृत्य, युगल नृत्य तथा समूह नृत्य के लक्षण तथा विशेषताएँ।

(4) कुतुप विन्यास।

(5) नृत्य के प्रतिष्ठित देवताओं का परिचय तथा उनकी नृत्य को देन।

(6) दिये गये निर्देशानुसार बोल, परन आदि की रचना करने की क्षमता।

(7) अर्जुन ताल, गणेश ताल, सरस्वती ताल आदि में सुगमतापूर्वक नृत्य करना।

(8) पूर्व के पाठ्यक्रम की तालों में सवाई– 1¼ डयोढ़ी–1½ पौनी दोगुनी – 1½ 1¾ आदि को तत्कार या बोल आदि में प्रस्तुत करना।

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 400 न्यूनतम : 144

(प्रथम प्रश्न–पत्र)

(1) देवी–देवताओं से सम्बन्धित स्त्रोत, ध्रुवपद तथा अष्टपदी पर नृत्य करना।

(2) किसी एक प्रचलित तथा एक अप्रचलित ताल में कथक के समस्त अवयवों को संशोधित कर सम्पूर्ण नृत्य प्रदर्शन की क्षमता।

(3) कथक की पारम्परिक शैली में हंस, मयूर, गज, मृग आदि गतियों पर प्रदर्शन।

(4) जयपुर, लखनऊ तथा बनारस घराने की बन्दिशों का संग्रह तथा उनका अभ्यास।

(5) कथक प्रदर्शन की प्राचीन तथा आधुनिक पद्धति का वस्तुक्रम में अन्तर।

(6) दिये गये कथानक पर बैले संयोजन की क्षमता।

(7) किसी भी दिये गये कथानक, ठुमरी या गीत पर गत या भाव प्रदर्शन की क्षमता।

(8) ठुमरी, भजन व गजल में से किन्हीं दो पर अभिनय।

(9) अष्टपदी, ध्रुवपद, चतुरंग, त्रिवट, तराना, माँड आदि पर भाव प्रस्तुत करना।

प्रायोगिक :

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 54

(द्वितीय प्रश्न–पत्र)

(1) अप्रचलित तालों व उनका प्रस्तुतीकरण। (अनिवार्य)

(2) ताल–प्रबन्ध, तोड़ा, परन, प्रिमलू, तत्कार आदि की विभिन्न प्रकार की बन्दिशें।

(3) ठुमरी भाव (बोल बाट की ठुमरी, कर–भाव, बैठक–भाव, अंग–भाव, नैन–भाव)

(4) नवरस।

(5) नायक–नायिका भेद।

(6) नृत्य संरचना।

(7) अष्टपदी, ध्रुवपद, चतुरंग, तराना (तीन ताल, एक ताल, झपताल) होली, चैती, कजरी तथा ऋतु गीतों पर आधारित नृत्य रचनाएँ।

नोटः परीक्षार्थी उपरोक्त में से (2 से 7 तक) किसी एक विषय को लेकर उसका प्रायोगिक रूप से विस्तृत अध्ययन कर उन्हें प्रस्तुत करेंगे तथा तत्सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर देंगे।

राजस्थान संगीत संस्थान

प्राचार्य : प्रो.डॉ. दिलीप कुमार गोयल

शैक्षणिक स्टाफ

गायन विभाग

1. प्रो. (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम – आचार्य
2. प्रो. (डॉ.) सीमा सक्सेना – आचार्य
3. प्रो. (डॉ.) सुनीता श्रीमाली – आचार्य
4. डॉ. गौरव जैन – सह आचार्य
5. डॉ. ममता – सहायक आचार्य
6. डॉ. वन्दना खुराना – सहायक आचार्य (कार्य व्यवस्थार्थ)

तबला विभाग

1. प्रो. (डॉ.) वसुधा सक्सैना–आचार्य
2. रिक्त पद

सितार विभाग

1. प्रो. (डॉ.) शिवा व्यास – आचार्य

नृत्य विभाग

1. डॉ. कविता सक्सैना – सहायक आचार्य
2. रिक्त

वायलिन विभाग

1. रिक्त पद
2. रिक्त पद

संगतकार

1. श्री संतोष कुमार रॉय
2. श्री सलीम अहमद
3. श्री लाला राम भारती
4. रिक्त
5. रिक्त

कार्मिक स्टाफ

1. हनुमान सहाय चन्देल (स. लेखाधिकारी प्रथम)

1. श्री लोकेश यादव (व. सहायक)
2. सुश्री सपना मीना (क. सहायक)
3. श्री निखिल बडजात्या (प्रयो. सहायक)
4. सुश्री सीमा मीणा (क. सहायक)
5. श्री जगसीर सिंह (कार्य व्यवस्थार्थ क. सहायक)
6. वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक – रिक्त पद

वाद्य यन्त्र अवधाता

1. रिक्त पद

सहायक कर्मचारी

1. श्री रामगोपाल शर्मा
2. श्रीमती भंवरी देवी
3. श्री छुट्टनलाल मीणा